SHRI GURUDAS DAS GUPTA: Let me suggest one thing. I don't mind speaking tomorrow. I understand that the hon. Members are agitated to know about the train accident. The hon. Minister has taken the pains to visit the place and come back to this House. But tomorrow we have a discussion on the Bihar situation also. Therefore, we have to accommodate this business tomorrow.

SHRI H. HANUMANTHAPPA: It should take precedence.

SHRI GURUDAS DAS GUPTA: I agree, I will speak tomorrow. But, Madam, you should fix up the time.

SHRI PRANAB MUKHERJEE (West Bengal): We have no problem if the discussion on Maharashtra could continue till tomorrow.

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARDE): Tomorrow there is a discussion on the Bihar situation also.

SHRI PRANAB MUKHERJEE: But this debate is already on. It has to be concluded.

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARDE): if the House agrees, I don't mind.

SHRI PRANAB MUKHERJEE: My suggestion would be let this discussion be continued tomorrow immediately after the Question Hour is over, dispensing with the Zero Hour and Special Mentions. This way we can devote more time for this and thereafter we can discuss the Bihar question.

SHRI GURUDAS DAS GUPTA: I agree with his suggestion. I also made a similar suggestion. Tomorrow, after the Question Hour is over and the Papers are laid on the Table, let us not look for the exciting events during the Zero Hour. Let us dispense with them and complete the discussion on the Maharashtra issue. At 2.30 p.m., let us begin the discussion on the Bihar situation.

श्री सुन्दर सिंह भंडारी: यह सब होने के बाद फिर बह लिया जाए, उसका कोई निश्चित समय नहीं रहेगा अगर यह आज का स्पिल ओवर कल करना है तो फिर कल की बिजनैस खत्म होने के बाद किया जाए।

SHRI GURUDAS DAS GUPTA: Madam, let us fix up the time. May I suggest that tomorrow at 2.30 p.m., we may take up the discussion on the Bihar situation?

SHRI SUNDER SINGH BHANDARI: What happens if the discussion on the Maharashtra situation is not over by 2.30 p.m.? How can we be sure that this debate would be over by 2.30 p.m.?

SHRI GURUDAS DAS GUPTA: The hon. Member should know that it is already listed and nobody can change it. The only point is the timing. Let the House agree, let the Chair say that we will take up the discussion on the Bihar situation at 2.30 p.m. Immediately after the Question Hour and before beginning the discussion on the Bihar situation, we should complete the discussion on Maharashtra.

SHRI SUNDER SINGH BHANDARI: I would like you to reconsider the matter because the business listed for tomorrow may have to be taken up first.

SHRI PRANAB MUKHERJEE: I think that would be disruption of the discussion. Let this item be over first and after that the Bihar issue can be taken up.

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARDE): The consensus is that immediately after the Question Hour, the discussion on Maharashtra should be continued. Let us now take up the statement to be made by the Railway Minister. Mr. Minister.

STATEMENT BY MINISTER RAILWAY ACCIDENT AT FARIDABAD

रेल मंत्री (श्री राम विलास पासवान): उपसभाध्यक्ष महोदया, मैं चाहता था कि यह स्टेटमेंट मैं पहले ही दे दूं क्योंकि मैं वहां से दो-ढाई बजे चला आया था। लेकिन जैसाकि प्रोसेज रल पॉइंट है, उस में स्टेटमेंट तैयार करने, उस का दोनों भाषाओं में ट्रांसलेशन करने और फिर आप के कार्यालय में पहुंचाने में विलंब हुआ है। इस के लिए मैं खेद प्रकट करना चाहता हूं। महोदया, मैं अभी जो स्टेटमेंट पढ़ूंगा उस के अलावा

काफी जानकारी मेरे पास है जिसको मैं माननीय सदस्यों द्वारा क्लैरीफिकेशंस पूछे जाने के समय उन का जवाब देते समय रखूंगा।

उपसभाध्यक्ष महोदया, मैं अत्यन्त दुःख के साथ सदन को एक दुर्भाग्यपूर्ण घटना की सूचना दे रहा हूं जिसमें 27 जुलाई, 1997 को 23.03 बजे मध्य रेल के झांसी मण्डल के फरीदाबाद स्टेशन पर 6317 हिमसागर एक्सप्रेस के पिछले भाग से 2627 कर्नाटक एक्सप्रेस टकरा गई।

यह दुर्घटना तब हुई, जब कन्याकुमारी से जम्मूतवी जाने वाली 6317 हिमसागर एक्सप्रेस फरीदाबाद स्टेशन पर अपने 2 मिनट के निर्धारित ठहराव के बाद अभी चली ही थी कि उसी समय 2627 कर्नाटक एक्सप्रेस जिसे फरीदाबाद स्टेशन के बाहर रुकना था, खतरे के निशान वाले होम सिगनल को पार कर गई और हिमसागर एक्सप्रेस के पिछले भाग से जा टकराई। फरीदाबाद के होम सिगनल का स्थान सीध में था और जो साफ देखा जा सकता था। कर्नाटक एक्सप्रेस लगभग 12 घंटे विलंब से चल रही थी क्योंकि गाड़ी का मार्ग परिवर्तन करना पड़ा था क्योंकि इटारसी-खण्डवा खंड भारी वर्षा के कारण प्रभावित हो गया था।

इस टक्कर से कर्नाटक एक्सप्रेस के आगे के 7 सवारी डिब्बों और 2 रेल इंजनों सहित हिमसागर एक्सप्रेस के पिछले 3 सवारी डिब्बे पटरी से उतर गए। इस खंड पर फिलहाल थ्रू यातायात रुका हुआ है और इसके जल्दी ही चालू हो जाने की आशा है।

नवीनतम रिपोर्टों के अनुसार, इस दुर्घटना में हिमसागर एक्सप्रेस के गार्ड सहित 12 व्यक्तियों की जानें गईं, 25 व्यक्ति गम्भीर रूप से घायल हुए हैं और 43 व्यक्तिों को मामूल चोटें आईं। चिकित्सा उपस्करों और डॉक्टरों एम्बुलेंस वाहनों के साथ तत्काल दुर्घटना स्थल पर पहुंच गए और उन्होंने घायलों को चिकित्सा सहायता प्रदान की। घायल व्यक्तियों को सरकारी अस्पताल, एस्कार्ट्स और सनफ्लैग अस्पतालों में दाखिल करा दिया गया है जहां उनकी हालत में सुधार हो रहा है।

दुर्घटना की सूचना मिलते ही स्वयं मैंने, अध्यक्ष, रेलवे बोर्ड और सदस्य यातायात के साथ दुर्घटना स्थल का दौरा किया। महाप्रबंधक, मध्य रवेल अपने विभागाध्यक्षों और डॉक्टरों के दल के साथ चिकित्सा राहत की व्यवस्था कराने और यातायात बहाल करने संबंधी कार्यों के लिए पहले ही वहावं पहुंच चुके थे।

मैंने मृतकों के निकट संबंधियों को 20,000 रुपए, गंभीर रूप से घायलों को 10,000 रुपए और मामूली रूप से घायल व्यक्तियों को 2000 रुपए की अनुग्रह राशि का भुगतान करने का आदेश दिया है। यह उस राशि के अलावा है, जो उन्हें रेल दावा अधिकरण के निर्णय के आधार पर क्षतिपूर्ति के रूप में दी जाएगी। क्षतिपूर्ति की राशि मामूली चोटों के लिए 16,000 रुपए से लेकर मृत्यु के मामलों में 2 लाख रुपए तक होती है।

फरीदाबाद के जिला प्रशासन ने विभिन्न सामाजिक संगठनों के सहयोग से प्रभावित यात्रियों को राहत प्रदान करने के काम में सराहनीय योगदान दिया है। इसके लिए मैं उनका आभारी हूं। फंसे हुए यात्रियों को दुर्घटना स्थल से विशेष बसों द्वारा 4.30 बजे सड़क के रास्ते रवाना कर दिया गया था।

पहली नजर में, दुर्घटना का कारण कर्नाटक एक्सप्रेस के ड्राइवर द्वारा फरीदाबाद के होम सिगनल की अनदेखी कर जाना प्रतीत होता है। रेल सरक्षा आयुक्त, मध्य सर्कल, मुंबई को इस दुर्घटना के कारणों की जांच करने के लिए आदेश दे दिए गए हैं। मैंने एक सप्ताह के भीतर अंतरिम रिपोर्ट तथा 28 अगस्त, 1997 तक अंतिम रिपोर्ट प्रस्तुत करने के आदेश दे दिए हैं। मैंने कर्नाटक एक्सप्रेस के ड्राइवर को निलंबित करने के आदेश भी दे दिए हैं।

मैं रेलों तथा अपनी ओर से शोकाकुल परिवारों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना और घायलों के साथ गहरी सहानुभूति व्यक्त करता हूं।

मुझे विश्वास है कि शोक-संतप्त परिवारों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना व्यक्त करने में सदन भी मेरा साथ देगा। मैं सदन को यह विश्वास दिलाता हूं कि दोषी पाए जाने वाले व्यक्तियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी।

मैडम, इसके अलावा एक दो पाइंट और मैं कह सकता हूं?

उपसभाध्यक्ष (कुमारी सरोज खापर्डे): जी, जरूर बोलिए।

श्री राम विलास पासवानः उपसभाध्यक्ष महोदया, इसके अलावा मैंने जो जानकारी ली है, उसके मुताबिक जितने हमारे रेलवे स्टेशन हैं, नई दिल्ली, निजामुद्दीन, बंगलौर, इसके अलावा साइट पर जहां यह घटना घटी है और जहां जहां हमने हास्पीटल में देखा है वहां वहां हर जगह हमने यह आदेश दिए हैं। चूंकि 12 मृतकों में से एक गार्ड है और 11 दूसरे पैसेंजर हैं, जिनमें सिर्फ 5 की

पहचान हो पाई है अभी तक, और जितने भी घायल हैं जिन लोगों की पहचान हो गई है, उन तमाम लोगों के नाम और पते के साथ हमने कहा है कि हर जगह, चाहे नई दिल्ली स्टेशन हो, निजामुद्दीन स्टेशन हो, हॉस्पीटल हो, सब जगह उनके नाम प्रसारित करने का काम वे करें। मैं खुद कल इस माननीय सदन में सारा का सारा विवरण, नाम, पते के साथ रखने का काम करूंगा। मैं सिर्फ इतना ही आपकी जानकारी के लिए कहना चाहता था।

श्री एन.के.पी. साल्वे (महाराष्ट्र): मैडम, एक बात साफ नहीं हो रही है कि सिग्नल का उल्लंघन करके इंजन ड्राइवर ने गाड़ी चलाई या सिग्नल ने ही ठीक से काम नहीं किया? यह बात जरा स्पष्ट कर दें।

उपसभाध्यक्ष (कुमारी सरोज खापर्डे): साल्वे जी, मंत्री जी के बयान पर जिन माननीय सदस्यों को स्पष्टीकरण पूछने हैं उनकी लिस्ट मेरे सामने है।

श्री एन.के.पी. साल्वे: उसमें मेरा नाम नहीं है।

उपसभाध्यक्ष (कुमारी सरोज खापर्डे): मैं उसमें आपका नाम भी जोड़ देती हूं। आपको भी जानकारी आज मिल जाएगी।

श्री एन.के.पी. साल्वे: नहीं, मैडम, नाम नहीं जोड़ना है। सिर्फ यह बात स्पष्ट कर दें, एक मिनट में आप कर सकते हैं।

उपसभाध्यक्ष (कुमारी सरोज खापर्डे): वह अपना जब जवाब करेंगे, जब माननीय सदस्य अपने स्पष्टीकरण कर लेंगे, तो उसमें जवाब देते समय आपके प्रश्न को भी ध्यान में रखेंगे। श्रीमती मारग्रेट आल्वा।

SHRIMATI MARGARET ALVA (Karnataka): Madam, it is with great distress that I rise to ask of the hon. Minister a few questions.

I had passengers coming by this train. We had been shuttling the whole night between the railway station and home. Luckily, they arrived alive and safe. To have first-hand information, I, myself, had been there at 7 o'clock this morning at the New Delhi railway station and, earlier, also at Faridabad. -

Madam, what I am trying to say is this. First of all, this accident took place, we are told, at about 11 in the night. Even at that time, the train was supposed to be running 17 hours behind schedule. We were constantly phoning up. Even at 12.30 in the night, when I personally phoned up to the station to find out as to what had happened to the train, why it had not arrived till that time—the train was to arrive at 12 in the afternoon—nobody at the station said that there had been an accident. We were told—साढ़े पांच बजे पहुंच जाएगी ट्रेन।

I was told that the train would arrive at 5.30 in the morning when, according to the statement, the accident had already occurred! I do not know why this kind of a thing is happening. When I telephoned in the night, at 12.30, I was told that the train would arrive at 5.30 in the morning. Half-an-hour later, I get a frantic phone call from Faridabad, saying that the train had met with an accident, 'we are on the platform; people have been injured and are dying; there is no help; what should we do?'.

What I would like to know is, when the accident had already occurred, how was this kind of information given to us at 12.30 in the night that the train would be arriving at 5.30 in the morning?

Madam, the second thing I want to say is..

श्री राम विलास पासवान: नई दिल्ली स्टेशन से?

श्रीमती मार्ग्रेट आल्वा: जी हां, नई दिल्ली स्टेशन से। मैंने खुद फोन किया था क्योंकि हम लोग स्टेशन पर जाने वाले थे हमारे लोगों को रिसीव करने के लिए।

The second thing I want to say is this. The late running of trains which are coming from the South is something which is taxing the drivers. Seventeen, eighteen, twenty hours late. Naturally, there is going to be a human error. The drivers are being taxed very much. Madam, this train was diverted three times. Different reasons have been given. It was to arrive almost 17 hours late. There is bound to be such human error when the drivers are made to work eighteen hours, twenty hours, beyond their scheduled hours of work, whatever else you may say, such human errors are bound to occur.

I am told, the train was going at such a speed in the night that the passengers were thinking that something was going to happen the way the train was going. The train was running at breakneck speed to make up for the lost time in order to reach the destination. Madam, I have raised in this House the question of long-distance trains. Different Ministers come at different times. The Karnataka Express, when it started, had five halts only between Bangalore and Delhi. Today there are 22 halts. From five you have increased them to 22 to please everybody in between. There are any number of trains between here and Gwalior. There are any number of trains between here and Jhansi and between here and other places. But, everybody who comes adds halts to please their local people, with the result that those of us who have to travel these long distances to Kerala, to Tamil Nadu or to Karnataka, have to sit for 40 to 46 hours in the trains because they stop everywhere like passenger trains. You charge us the super-fast rates, but the trains are nothing but passenger trains. People come in and go out of them with baggages and everything else and sleep on the corridors without reservation, and we are made to feel that we are intruders. I have repeatedly raised this. I have written earlier to the Railway Board also. I would request that long-distance trains be given special attention.

मंत्री जी, आप तो आजकल बिहार में बहुत बिजी हैं। आप लोगों का उधर डि-रेल हो रहा है, उसको बचाने का या उसको गिराने करने का काम आपके हाथ में है। मैं आपसे पूछ रही हूं कि रेलवे मंत्रालय को कौन देख रहा है? आज जो हो रहा है, उसको कौन देख रहा है?

There is no leadership. There is no control. It has become a Government for survival.

I would, therefore, like to ask this. Accidents are not the only problem today. The security on the railway today, if I may say so, is abysmally low and disastrous. You are talking about the common people. You are talking about the ordinary traveller. What is being done for their security and for what is happening? When you know that trains are running behind schedule in the rainy season, in the flood situation, what special monitoring are you doing?

I was told that there was a derailment, and that is why the trains were diverted and that they had to go on a different route and then come back to the main route. I do not know. Each one is giving a different story. I am told that even the passengers who were stranded amidst the dead bodies, screaming people and everything else that was happening at Faridabad, reached the New Delhi Railway Station at six o'clock in the morning. The stranded, the injured, the dying and everybody else were left on the platform in the night. These people were brought from there at six o'clock in the morning to the New Delhi Railway Station. It took five or six hours when you are in the capital, Delhi! Does it take so long to move people? This is an accident.

Those of us who come by long-distance trains, have been repeatedly complaining about the poor service, the late running and the disastrous management of the trains these days. Now they have started some controversy that the railway lines are defective because they are India-made, that they are not imported. All sorts of import lobbies and export lobbies are operating in the Railway Board and the Railway Minister. I am saying: do your stock taking, do proper management and, for God's sake, let the lives of the people get precedence over your politics in Bihar and over your governmental politics.

Thank you, Madam.

श्री एच० हनुमनतप्पा (कर्नाटक): मंत्री जी ने बोल दिया है कि नाम वगैरह कल देंगे। उन्होंने एक स्टेटमेंट दिया है कि हिम्मतसागर से 11 आदमी मरे हैं और एक इंजन ड्राइवर भी इसमें शामिल है। कर्नाटक एक्सप्रैस से कोई नहीं मरा है, स्टेटमेंट से तो यह लगता है। उसके 7 डिब्बे पटरी से उतरे हैं लेकिन कर्नाटक एक्सप्रैस में से

कोई नहीं मरा है, यह स्टेटमेंट बताता है। एक भी नहीं मरा है क्या?

SHRIMATI MARGARET ALVA: At least fifty have been injured. There AC second-class sleeper bogies have been involved.

श्री एच० हनुमनतप्पाः इतना तो हम बोल सकते हैं, बंगलौर से हमें जो फोन आ रहे हैं, कर्नाटक एक्सप्रैस में कोई नहीं मरा है, इतना तो हम बोल सकते है डैफिनेटली? आपका स्टेटमेंट जो है, जो आपने पार्लियामेंट में दिया है कि हिम्मतसागर एक्सप्रैस में इतने लोग मरे, तो इसका मतलब है कि कर्नाटक एक्सप्रैस के जो 7 डिब्बे पटरी से उतरे हैं, उसमें एक भी आदमी नहीं मरा है, इतना तो हम बोल सकते हैं?

उपसभाध्यक्ष (कुमारी सरोज खापर्डे): अच्छा होता अगर आपने कर्नाटक एक्सप्रैस के बारे में मैंशन किया होता। इससे सदस्यों की जो शंकाएं और कुशंकाएं हैं, उनका समाधान हो जाता।

श्रीमती मार्ग्रेट आल्वा: उन्होंने कहा कि जो एक्सप्रैस का ड्राईवर था, उसको सस्पेंड कर दिया गया है। जब कि सुबह पेपर में निकला है कि कर्नाटक एक्सप्रैस का ड्राईवर मारा गया।

श्री राम विलास पासवानः उपसभाध्यक्ष महोदया, जो मंत्री खड़ा होकर के सदन में कहता है वह सही होता है या जो पेपर में निकलता है वह सही होता है। मैं खड़ा होकर के कह रहा हूं कि कुल मिला करके 12 लोग मरे हैं जिसमें एक गार्ड है। जो ड्राईवर है-एलिश, वह एस्कार्ट में भर्ती है। हम वहां गए हैं। हम तीनों जगह गए हैं। एस्कार्ट गए, सन फ्लैग गए और यह तीसरा गवर्नमेंट का हास्पिटल है वहां भी गए हैं। मैं कह सकता हूं कि जो भी मैंने स्टेटमेंट...(**व्यवधान**)

SHRI VAYALAR RAVI (Kerala): Madam, there is no translation.

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARDE): There is no translation.

SHRI RAM VILAS PASWAN: Are you getting the translation now?

मैं तो वहां गया हूं, चार घंटे वहां रहा हूं और मैं हाऊस को एश्योर करना चाहता हूं कि 11 लोग मरे हैं और 11 में से 5 लोगों की शिनाख्त हो गई है।

SHRI VAYALAR RAVI: Madam, even now there is no translation.

SHRI RAM VILAS PASWAN: For your convenience I will speak in English.

Twelve people have been killed. Out of the 12, one is a Guard. Of the eleven people killed, five have identifed. Rest of the deceased have not been identified. So, I cannot say whether the deaths were from the Himsagar Express or from the Karnataka Express, but the number of deaths is 12. If there is any doubt, let a committee of Members of Parliament go there. It is not far from here. I can arrange vehicles for their visit. You go there, find out the actual position and give your report. As Railway Minister, I announce here that I will accept your recommendations. You give your report tomorrow and I will accept your recommendations.

SHRI JOHN F. FERNANDES (Goa): Madam, every statement on railway accidents comes as obituary in this House, because there are often many deaths in the accidents. Because of these accidents, it is not that the lives of passangers are lost, but other expensive properties are also destroyed. Therefore, a loss of crores and crores of rupees is caused to the Railways.

Madam, I happened to be a Member of the Standing Committee of Parliament on Railways. My point is that the Minister appoints inquiry commissions and their reports are never laid on the Table of the House. That is why the Standing Committees do not have access to these reports. The hon. Minister mentioned in his statement that within one week he would get an interim report. Therefore, I would like to know, when he gets the report, whether he would take the House into confidence.

The statement says that there was an over-shooting of the red signal. Madam, trains run late. This Karnataka Express was running, 12 hours late.

SHRI VAYALAR RAVI: It was late by 17 hours.

SHRI JOHN F. FERNANDES: But the Minister says it was late by 12 hours.

Anyway, it was running 17 hours late. So, I would like to know whether any precaution has been taken to caution the Station Masters about the late running of the trains. I had stated last time that we can communicate via satellites. We can have the radar system. It is not an expensive technology. We have so many satellites in the sky. At the moment we are depending on the optic-fibre cables, which are not functioning properly. Even the Standing Committee in its report has said—and I have also told the Minister—that we can have communication via satellites or we can make use of the radar. This technology is available even in small countries abroad and this will not cost us much. If you have this technology, accidents can be avoided. The engine driver of the Karnataka Express could have contacted the Station Master that he was late. And are we attaching any signal light to the rear end of the train The Karnataka Express rammed into the rear end of the Himsagar Express. I don't think that it is a practice with the Indian Railways to have a warning light on the rear end of the train. If at all it is, it is just like a small lamp. It is not a powerful light. I would like to know whether this system is being observed in the Railways. It has also been said that some equipment is available abroad to avoid accidents whereby when there is a danger signal, it cannot overshoot the track. Those have not been installed. When an accident occurs in our Railways, the Ministry loses crores of rupees. Therefore, I would like to know from the Minister whether he is going to modernise our Railways and whether he is going to have telecom system via satellite because you can see in the street everybody is walking with a radial telephone. The same scheme, the same system can be inculcated in the Railways. That will help us a long way to save money. But I think it is the intention of the Government to go in for an expensive procurement because this is the cheap technology. This techolongy will cost us only Rs. 200 crores. The optic fibre cable costs us about Rs. 800 crores which is not utilised. So, I want to know from the hon. Minister whether he will modernise the Railways to see that these accidents do not occur in future. Thank you.

SHRI K. RAHMAN KHAN (Karnataka): Madam Vice-Chairperson, unfortunately the Karnataka Express rammed into the rear end of the Himsagar Express. The Minister has made a statement. Whenever an accident takes place, there will be a *suo motu* statment by the Railway Minister and then some compensation will be announced and later on a court of inquiry will be ordered. As our colleague, Shir John F. Fernandes said, the inquiry committee reports are never placed before the Parliament. If a railway station master or some employees are suspended, it is not going to stop accidents. The responsibility has to be assumed by the higher officials. These accidents take place on account of human error. The incidence of human error is increasing. The Karnataka Express was late by 12 hours. Naturally, the driver of the train was in a hurry to reach the New Delhi railway station. In such circumstances, what was the responsibility? How are such accidents to be prevented? We have been discussing about accidents in this House during the discussion on the Railway Budget. Whenever such accidents take place, the Railway Board has to assume certain responsibility. The Member (Traffic) has to own the responsibility. Whenever an accident takes place, we will be putting the blame on the Railways. It has become a ritual for the Railway Minister to make a statement. But the number of accidents is increasing. So, I urge upon the Railway Minister to devise some mechanism by which this human error is rectified. Why is the human error occurring? How to prevent it? Why should not the Railway Minister fix responsibility on top level officers for such accidents? This is my submission.

SHRI GURUDAS DAS GUPTA (West Bengal): Madam Vice-Chairperson, I understand that Ram Vilas Paswanji is an important political leader of the country. He is a good friend of our. But unfortunately I have to admit and it is to be admitted by all including the hon. Minister that accidents and derailments of trains are on the rise everywhere. It is not a question as to how this particular accident has taken place. That is not the issue. The issue is accidents are on the rise. In my opinion, it is alarmingly on the rise. I am sorry to say that no Railway Minister, no Railway Administration no Railway Board, had taken this issue seriously to set the things right. Something is definitely wrong. Otherwise, there cannot be such numerous accidents. Therefore, Ram Vilas Paswanji owes an explanation because of his commitment towards the people as he says. He must say why the accidents are on the rise and what steps they are going to take. We are not interested in ritualistic obituaries or we are not interested in the repetition of assurances. I would just ask the hon. Minister to tell us how many accidents took place during the last six months. Awful accidents are not reported. When there is a derailment of a goods trains, that is never reported. It is not there on the record. We do not come to know of it at all. Whenever lives are lost and that comes to the notice of the country, we know that accidents are taking place. There is always an attempt to cover up. There is always an attempt to say that there was a human error. The best way to explain a derailment is to say that there was a human error. How does the hon. Minister know—I wish he told the House—before the inquiry has taken place that there was a human error which was responsible for the accident? He has been given the report by the Railway Board members. And the Railway Board members gave it to him just to say that everything is all right in the Railways. Things are not all right. I am saying this because I am connected with a number of railway unions. We have been telling the South-Eastern Railway management that the engines which run the railways are under-powered, with a diluted brake power. You can very well imagine what will happen if the trains are run by engines having diluted brake power. At any point of time, the driver may be unable to hold up the train. We have been telling this Government that the engines are not adequately equipped. We have been telling. You may look into the records. I beg you, Mr. Ram Vilas Paswan, to call for reports from your General Managers. Do not believe the stories dished out. Hon. Chairperson, please ask the Minister not to believe the cock-and-bull stories. You are running the trains with defective engines, with defective brake power. That is No. 1.

Secondly, we know that the maintenance of the track is not at all good. It is privately done. Contractors are doing it. Thirdly, in many cases, the signalling system is wrong and bad, at least not up-to-date. Fourthly, there is no overhauling of the railway engines, repairing of the railway engines, repairing of the coaches. It is all sub-standard. For heaven's sake, let the hon. Labour Minister....(*Interruptions*).... Once upon a time, he was the Labour Minister. That is why I am calling him Labour Minister.

Please visit, be on board, a number of trains without allowing them to know that you are on board. If they know that you are visiting the Howrah station, it will be paradise. The General Manager and all will be there with folded hands. They will ask people to clean up. Please board a number of passenger trains. Don't run by saloons. Always move unnoticed. Board the trains meant for the south. Board the trains meant for the north and the east, without allowing them to know, *in cognito*. मेहरबानी करके जाइए। मत बोलिए कि राम विलास पासवान जी आए हैं। बोलिए कि कोई काम करने वाला मजदूर है। Please board a train and find out what it is. Please find out what your officials are doing. I know, Madam, this is not the time for telling all this. But I would like to say this. The Chairmen of

the Railway Board are always interested....

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARDE): Das Guptaji, one thing you must know. Whenever he travels, whenever he goes somewhere, Mr. Ram Vilas Paswan never tells people that he is the Minister. He always travels just like an ordinary person. Please do not forget this. He is not travelling everywhere as a Minister. (*Inerruptions*). I know it for sure. You may say he should travel more.

SHRI GURUDAS DAS GUPTA: I stand corrected.

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARDE): He should travel more unnoticed. (*Interruptions*)

SHRI VAYALAR RAVI: Madam, this is a news to me that the Railway Minister travels by trains. (*Interruptions*)

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARDE): I am telling this because I have seen this with my own eyes and that is how I know this thing. Otherwise, I would not have said this thing. (*Interruptions*)

SHRI VAYALAR RAVI: Madam, I think none of us declares that I am so and so while travelling. Neither you nor I do it.

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARDE): He does not tell the people that he is the Minister for Railways. (*Interruptions*)

SHRI SURINDER KUMAR SINGLA (Punjab): Madam, whenever he travels, he travels by air. All the functions which he has attended either with the Prime Minister or by himself, he has travelled by air and not by trains. (*Interruptions*)

उपसभाध्यक्ष (कुमारी सरोज खापर्डे): देखिये मैंने भी देखा है ट्रेवेल करते हुए ट्रेन से (व्यवधान)

SHRI JOHN F. FERNANDES: Madam, the very fact that he is flying indicates that the Railways are not safe. (*Interruptions*)

SHRI GURUDAS DAS GUPTA: I stand corrected that way. But my point is, if he moves in trains unnoticed, he will find out the real state of affairs in the trains. We move by local trains, we move by passenger trains. If he also moves by these trains, he will find out the real state of affairs prevailing in the Railways. He should not be led by his nose according to the information given to him by him officials. Therefore, my short point is that there is a deep-seated malady in the administration of the Railways and there is always an attempt to pass on the cause of derailment to a human behaviour. Therefore, I implore upon the hon. Minister not to rely so much on the reports given to him by others but to look for himself.

Secondly, a long-drawn out strategy has to be chalked out to ensure that things become better in the Railways. It is not done, the position will not improve. I personally do not believe in God. Then according to you, may be, by the grace of God, accidents are not mounting. It is just a play of chance. According to me, it is just a play of chance. According to Margaret Alva Ji, it may be due to the grace of God. Whatever it is. But becuse of the play of chance, accidents are not increasing. Therefore, the only assurance that I want from the hon. Minister is that what concrete steps he is going to take with regard to the complaint. Tracks are not being properly maintained, engines do not have that power to stop their speed as they should have. Thirdly, I want to know about signalling, and fourthly, the accountability of the members of the Railway Board must be ensured. It is they who are responsible for the mismanagement and it is always they who pass on the buck to the lower grade employees. Thank you.

SHRI S. RAMACHANDRAN PILLAI (Kerala): Madam, I also express my heartfelt condolences to the bereaved and also express my sympathies to the injured. I congratulate the Minister

for coming forth with a statement immediately. Of course, many accidents are taking place. Many accidents are taking place due to human error, many accidents are taking place due to system failure, many accidents are also taking place due to mechanical and other failures. The number of these accidents is increasing. There had been negligence in properly carrying out maintenance and repair work some years ago. I want to know from the hon. Minister whether the negligence which had occurred during the earlier years is contributing to the growing number of accidents. My second question is this. Of course, there is a lot of literature and a lot of discussion has taken place about modernisation and modern system of safety measures. Will the Government consider to modernise our safety system to meet the increasing number of accidents? There has been a complaint that we are not giving proper attention to science and technology within the Department. It should be geared up in the context of these increasing number of accidents. Will the Government pay more attention to R&D and science and technology to develop safety measures? Thank you.

श्री विष्णु कान्त शास्त्री (उत्तर प्रदेश): महोदया, इस वक्तव्य के अंतिम वाक्य से मैं अपना स्पष्टीकरण पूछना चाहता हूं। अंतिम वाक्य में यह कहा गया है कि दोषी पाये जाने वाले व्यक्तियों के खिलाफ सख्त कार्यवाही की जाएगी। मैं पूछना चाहता हूं कि दोषी कौन है। दोषी क्या केवल वही ड्राइवर है जिसने सिग्नल के अनदेखी की या दोषी वह व्यक्ति है जिसने सिग्नल दिया या नहीं—क्योंकि यह बात बहुत साफ नहीं है कि सिग्नल दिया गया या नहीं दिया। तो दोषी कौन है। सबसे बड़ा सवाल यह है। इसी महीने कम से कम 4 रेलवे दुर्घटनाएं हुई हैं। पिछले महीनों में इस साल में इस आज तक कम से कम 72 रेलवे दुर्घटनाएं हुई हैं। इन 72 रेलवे दुर्घटनाओं का दोष केवल ड्राइवरों के ऊपर या सिग्नल मैन के ऊपर। मैं यह पूछना चाहता हूं कि रेलवे का अगर कोई अच्छा काम होता है तो उसका श्रेय कौन लेता है अगर कहीं नया शिलान्यास करते हैं या कोई नयी रेल चलाते हैं, अगर कहीं नया कोई जंक्शन खोलते हैं तो तस्वीर किसकी छपती है। श्रेय किसको मिलता है। श्रेय लेने वाले लोग अलग, दोष लेने वाले लोग अलग। यह न्याय नहीं है। जिसको श्रेय मिलता है उसी को दोष देना चाहिए। दोषी सबसे अधिक यह पूरा विभाग है जिसके नेता श्री राम विलास पासवान जी हैं। दोषी यह पूरा विभाग है जिसमें रेलवे बोर्ड के मेम्बर हैं जिसमें बड़े अधिकारी हैं क्योंकि यह पूरी व्यवस्था सड़ गयी है। आखिर यह कैसे होता है कि एक साल के सात महीनों में 72-72 दुर्घटनाओं की जांच नहीं होती, उन 72 दुर्घटनाओं के कारण हीं समझे जाते हैं, उन 72 दुर्घटनाओं के कारणों का निवारण नहीं किया जाता है। अगर एक बार दुर्घटना होती है तो उसी कारण से दूसरी दुर्घटना भी होती है, तीसरी भी होती है। आखिर 12-12 घंटे तक रेल या उन्होंने कहा कि 17-17 घंटे तक रेल विलम्ब से चलती है तो क्यों चलती है। उसके लिए कोई उत्तरदायी नहीं है। दोषी कौन है। वह व्यक्ति जिसे निलम्बित कर दिया गया। दोषी कौन है। वह सिग्नल मैन जिसने सिग्नल दिया कि नहीं दिया अभी तक विवादित है। यह बात—दोष दूसरों का, श्रेय मेरा—सिद्धांततः गलत बात है। श्रेय जिसका है दोष उसी का है और अगर किसी को दोष देना है तो सबसे पहले माननीय मंत्री जी को अपने को दोष देना चाहिए और वे बताएं कि अपने को क्या दण्ड देना चाहते हैं। दूसरा मैं यह पूछना चाहता हूं कि कल 11 बजे रात को यह दुर्घटना हुई। माननीय रेल मंत्री जी ने बताया कि सूचना मिलते ही मैंने वहां दौरा किया, बताया जाना चाहिए कि उनको सूचना कब मिली, बताया जाना चाहिए कि उन्होंने दौरा कितने बजे किया। सूचना कब मिली, दौरा कब किया गया। व्यवस्था कब हुई, कैस हुई। व्यवस्था ठीक नहीं हुई यह बिल्कुल स्पष्ट है। फरीदाबाद से नयी दिल्ली पहुंचने के लिए अगर 11 बजे से साढ़े 6 बजते हैं जैसा कि अभी माननीया मारग्रेट आल्वा जी ने बताया तो इसका मतलब है कि कोई व्यवस्था वहां नहीं थी। उसके बाद उन्होंने बताया कि चारों तरफ से सहयोग की व्यवस्था हुई चिकित्सा राहत की व्यवस्था हुई। बहुत मुश्किल बात है मान लेना। इसलिए मैं यह कहना चाहता हूं कि यह पूरा रेलवे विभाग बीमार है। इस पूरे रेलवे की चिकित्सा होनी चाहिए और इसके बारे में पूरा निर्णय लेना चाहिए और उस बारे में कोई निर्णय बिल्कुल स्पष्ट होना चाहिए। हमको देखना चाहिए कि दुर्घटनाएं कम हों। हम केवल शोक प्रस्ताव पास कर दें, हम केवल उनको मुआवजा दे दें और दुर्घटनाएं बढ़ती चली जाएं और हम बार-बार यह स्पष्टीकरण पूछें तो इसमें कोई अर्थ नहीं है। दुर्घटनाएं रुकेंगी तब हम मानेंगे कि काम हो रहा है।

श्री उपसभाध्यक्ष (कुमारी सरोज खापर्डे): शास्त्री जी, थोड़ा संक्षेप में बोलिएगा क्योंकि काफी लोग स्पष्टीकरण पूछने वाले हैं।

श्री विष्णु कान्त शास्त्री: मैं सिर्फ यही पूछना चाहता हूं कि इस संबंध में यह बताया जाए कि वहां जो लोग रोक लिए गए थे वे कब तक पहुंचे? क्या यह सही है कि 6.30 बजे सुबह उन्हें यहां नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर पहुंचाया गया? अगर यह भी है तो यह बताइये कि साढ़े 7 घंटे तक व्यवस्था क्यों नहीं हो सकी? हमें यह भी आश्वासन दिया जाए कि इसकी जांच केवल एक-दो घटना तक सीमित न रह कर संपूर्ण विभाग में जो त्रुटियां हैं, गलतियां हैं जिनसे दुर्घटनाएं होती हैं उनकी भी जांच करेगी?

श्री मूलचन्द मीणा (राजस्थान): उपसभाध्यक्ष महोदया, रेल दुर्घटना के संबंध में इस हाउस के अंदर, लोक सभा के अंदर रेल मंत्री जी वक्तव्य दे देते हैं, क्लैरिफिकेशन पूछ लिए जाते हैं, पर दुर्घटनाएं घटने से रुकती नहीं हैं बल्कि बढ़ती चली जाती हैं। इसके मुख्य क्या कारण हैं? मुझे तो ऐसा लगता है कि मंत्री जी, कि इन दुर्घटनाओं की जिम्मेदारी कोई लेता ही नहीं है। आप जिम्मेदारी फिक्स करिए कि इसकी जिम्मेदारी से यह दुर्घटना हुई है। आप ड्राईवर को लेते हैं, सिगनलमैन को ले लेते हैं उनको सस्पेंड कर देते हैं। इन लोगों पर जिम्मेदारी डाल देते हैं। आपको इन दुर्घटनाओं को रोकने के लिए गंभीरता से जिम्मेदारी फिक्स करनी चाहिए। इन जिम्मेदारियों को कुछ बड़े अधिकारियों पर भी डालिए तब जाकर ये बड़े अधिकारी होश में आयेंगे, तब जाकर रेलवे का प्रशासन चुस्त होगा और तब जाकर दुर्घटनाएं रुकेंगी। इसलिए आपको जिम्मेदारी तो फिक्स करनी ही पड़ेगी।

दूसरे, पांच घंटे तक घायलों को इलाज नहीं मिला। फरीदाबाद दिल्ली के नज़दीक है और पांच घंटे तक घायल मरीज़ बिना इलाज़ के पड़े रहे। कई तो सीरियसली घायल थे और उनमें से कई तो मर भी गए होंगे। फरीदाबाद दिल्ली से ज्यादा दूर नहीं है तो इस विलम्ब के क्या कारण रहे? वहां पर आप भी गए थे। जब शास्त्री जी पूछ रहे थे कि कितने बजे गए, कब गए और आपके जाने पर क्या हुआ, आपके जानें पर रेल प्रशासन ने क्या-क्या व्यवस्थाएं कीं और उससे पहले क्या कीं, इन बातों के बारे में आप थोड़ा सा अपने वक्तव्य के अंदर भी बताते। साथ ही मृतक [illegible] प्रत्येक परिवार को आपने बीस-बीस हजार रुपये दे दिए जबकि दो लाख रुपये देने की बात है जो मर गए हैं उनकी तो कोई गलती है ही नहीं, वे तो रेल प्रशासन की गलती के कारण मरे। उनके परिवार को, उनके संबंधियों को आपने सिर्फ 20 हजार रुपये की राशि दी, आपको दो लाख रुपये तो अभी दे देने चाहिए। अभी शास्त्री जी बता रहे थे कि इस प्रकार की 72 घटनाएं इस देश के अंदर हुई हैं। मंत्री जी, रेलवे यातायात का एक प्रमुख साधन है और लोगों को इसमें विश्वास भी है क्योंकि यह एक सुरक्षित साधन है। लेकिन ये घटनाएं जब घटती हैं तो लोगों को विश्वास नहीं रहता। आज सड़कों से यात्रा करते हैं, बसों से और कारों से यात्रा करते हैं तो इतनी भीड़ सड़कों पर रहती है कि एक्सीडेंट हो जाते हैं। लोग रेलवे को सुरक्षित समझते हैं। लेकिन आज तो इसमें भी एक्सीडेंट होने लगे और ज्यादा तादाद में होने लग गए।

उपसभाध्यक्ष (कुमारी सरोज खापर्डे): मीणा जी, संक्षेप में पूछिएगा, बहुत लोग स्पष्टीकरण चाहते हैं। काफी लोगों की लिस्ट मेरे सामने है और सब को मौका देना होगा।

श्री मूलचन्द मीणा: तो मंत्री जी एक बात यह बताएं कि जो कर्नाटक एक्सप्रैस थी वह 12 घंटे लेट चल रही थी। वह 12 घंटे लेट को कवर करने के लिए क्या ड्राईवर इतनी तेजी से उस ट्रेन को चला रहा था जो शायद वह स्टेशन पर ट्रेन को रोकना भी चाहता होगा लेकिन ट्रेन रुकी नहीं हो, तो आप यह बताने का कष्ट करें कि उस ट्रेन की रफ्तार क्या थी?
और आप ने 7 दिन के अंदर रिपोर्ट आने की बात कही है। रिपोर्ट आए तो आप उस के बाद आकर सदन को बताएं कि हम ने इस दुर्घटना के लिए किस को जिम्मेदार ठहराया है और किस कारण यह घटना हुई है। अभी आप ने वक्तव्य दिया है, 7 दिन बाद जब रिपोर्ट आ जाए और उस रिपोर्ट पर जो एक्शन हो, वह भी सदन को बताया जाए कि इस दुर्घटना पर हम ने यह एक्शन लिया है। यही मैं आप से जानना चहता हूं।

SHRI K. R. MALKANI (Delhi): Madam, we in this country are having too many railway accidents of a very serious nature and I am sorry to say that ever since the present incumbent of this Ministry assumed office, the number and the seriousness of accidents have increased dangerously. I am afraid the hon. Minister is too busy issuing passes, playing politics and staging stunts to take care of the Railway Ministry. Madam, as early as 27th February, 1997 I gave a notice under rule 238 (a) to raise at the earliest oppor-

tunity the matter of the arbitrary and lawless behaviour of hon. Railway Minister. To this day the hon. Minister has not been able to find the time to respond to my notice. This is his sense of responsibility. Madam, only a few days back....

SHRI RAM VILAS PASWAN: I could not follow what you wanted to say.

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARDE): He has given a notice.

SHRI K. R. MALKANI: I gave a notice on 27th February, 1997 under Rule 238 (a) to raise the matter of the arbitrary and lawless behaviour of the hon. Railway Minister at the earliest opportunity. I enclosed five cuttings. I gave one copy to the Chairman and one copy. ...*(Interruptions)*...

उपसभाध्यक्ष (कुमारी सरोज खापर्डे): इस में मंत्री जी का क्या दोष है?

SHRI K. R. MALKANI: I am not a postman to deliver letters.

उपसभाध्यक्ष (कुमारी सरोज खापर्डे): आप ने जो नोटिस दिया है, उस के लिए मंत्री जी को कैसे जिम्मेदार ठहराया जा सकता है? वह नोटिस तो हमारे सेक्रेटेरिएट में एडमिट होता है। उस के लिए रेलवे मंत्री जी को जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता है।

SHRI K. R. MALKANI: I was told by the Chair that the matter will be taken up with the hon. Minister when he is willing to respond. ...*(Interruptions)*...

श्री राम विलास पासवान: उपसभाध्यक्ष जी, मैं दूसरी चीज का जवाब बाद में दूंगा, लेकिन मैं चैलेंज करता हूं कि राम विलास पासवान एक अकेला मंत्री है जिस-जिस मुद्दे को सदस्यों ने उठाने का काम किया है—सदन के बाहर उठाने का काम किया है, किसी कमेटी में उठाया है, मैं एक-एक पॉइंट का जवाब भेजता रहा हूं और भेजता रहूंगा। यह मैं चैलेंज के साथ कहता हूं। इसलिए मेरे ऊपर दूसरा आरोप लगा दें, लेकिन यह आरोप नहीं लगाएं।

उसभाध्यक्ष (कुमारी सरोज खापर्डे): आप चैलेंज मत कीजिए। आप जवाब देते हैं हमारे आदरणीय सदस्यों को यह बात अलग है। यह तो आप की अच्छाई है कि आप ने जवाब दिया है और आप देते रहेंगे।

SHRI K. R. MALKANI: Madam, I repeat that hon. Minister has been staging stunts. A few days back he and the Prime Minister went to kashmir. *(Interruptions)*

SHRI MD. SALIM (West Bengal): How is it connected with the accident? ..**(व्यवधान)**..

श्री वसीम अहमद (उत्तर प्रदेश): इस का कांटेक्स्ट क्या है ...**(व्यवधान)**... वह हर रेलवे के लिए कह रहे हैं ...**(व्यवधान)**... हर चीज को पॉलिटिकल एंगल से देखा जा रहा है। जो एक्सीडेंट हुआ है, उस पर डिस्कस कीजिए।

SHRI K. R. MALKANI: He is too busy with irrelevant things. *(Interruptions)*

SHRI JIBON ROY (West Bengal): Madam, he is politicing the issue. *(Interruptions)*

SHRI K. R. MALKANI: Madam, there is no railway line, there are no wagons ...*(Interruptions)*... No signal at Baramula, Qazigund and Srinagar and yet they went to lay the foundation stone of their railway station".'

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARDE): Malkaniji, I am talking to you.

SHRI K. R. MALKANI: Yes.

उपसभाध्यक्ष (कुमारी सरोज खापर्डे): मलकानी जी, हम लोग जो स्पष्टीकरण मांग रहे हैं, वह इस विषय पर मांग रहे हैं कि कर्नाटक एक्सप्रेस और हिमसागर एक्सप्रेस का जो एक्सीडेंट हुआ है। उस एक्सीडेंट के बारे में हम लोग सवाल पूछ रहे हैं। तो अब यहां पर जम्मू-कश्मीर का संदर्भ कहां से आ गया? इसलिए आप इसी विषय पर सवाल पूछिए।

SHRI K. R. MALKANI: Madam Chairperson, try to understand me.

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARDE): I understand what you want to say. *(Interruptions)*

SHRI K. R. MALKANI: Recently, there was a very unfortunate incident of violence—firing in Mumbai; The Home Minister found time to visit once, but the

Railway Minister found time to go there twice ...*(Interruptions)*... he goes to excite feelings ...*(Interruptions)*... The Home Minister makes one kind of statement while the Railway Minister makes another kind of statement in Mumbai. Is there any co-ordination? Is there any sense of joint responsibility?

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARDE): Mr. Malkani, what is your clarification on this accident? What clarification do you want to seek from the hon. Minister?

...*(Interruptions)*...

SHRI K. R. MALKANI: The whole of the Railways is disturbed from top to bottom. I request the Railway Minister, I beg of him, to respond to this notice and face the House.

Thank you very much.

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARDE): How can he respond to your notice? ...*(Interruptions)*... मलकानी जी, आप जो स्पष्टीकरण मांग रहे हैं मंत्री जी से और जो मंत्री जी का स्टेटमेंट है, यह एक दूसरे से बिल्कुल मेल नहीं खा रहा। आपके दिए हुए नोटिस का संबंध इससे नहीं है। इसका जवाब तो आपको चेयरमेन दे सकते हैं या एक्टिंग चेयरमेन दे सकते है या सेक्रेटरिएट दे सकता है। आप इसके लिए मंत्री जी को क्यों दोष दे रहे हैं। आपको इस स्टेटमेंट के बारे में अगर कुछ पूछना हो तो जरूर पूछिएगा।

SHRI K. R. MALKANI: The whole work in the Railway Ministry has gone away ...*(Interruptions)*... He has no time for that ...*(Interruptions)*...

उपसभाध्यक्ष (कुमारी सरोज खापर्डे): आप क्लैरिफिकेशन पूछिए।

श्री के॰ आर॰ मलकानी: क्लेरिफिकेशन क्या पूछें। स्टेटमेंट से क्या पूछें। एक्सीडेंट हो गया, अब क्या जवाब देंगे आप ...**(व्यवधान)**...

उपसभाध्यक्ष (कुमारी सरोज खापर्डे): ठीक है, तो फिर आप बैठ जाइए। ...व्यवधान)...

SHRI SURINDER KUMAR SINGLA: Madam, I am extremely pained to note that my friends are actually trying to undermine the seriousness of the accidents which are increasing day by day, on which Mr. Malkani was speaking.

There used to be a Minister, a model Minister, Shastriji, who resigned on a small accident. Now, my friends, Das Guptaji, Vishnuji and others have said that in the last 11 months or 12 months, the highest number of accidents took place. In the morning, I counted. In this month alone, there were four accidents. The response is a *suo motu* statement in the House. Obituary references are made here and outside the House. I have a specific question. Firstly, what is the total number of accidents that took place? It is not really the first of its kind. Similar accidents took place. On 4th of July, there was an accident. The largest number of accidents took place during Paswanji's tenure. Shri Meena has said that rail journey is the safest. Now, it is the most unsafe one. Rightly, the Minister does not want to travel by trains because it is unsafe. There were bomb blasts. There was a bomb blast in Bhatinda. A bomb blast took place in the Brahmaputra mail. I can give many examples. There was bomb blast in Ambala in the month of May. If the Minister wants to raise a controversy with Mr. Malkani, does he wants to say that there are not accidents and there is nothing to be serious about? We would like to ...*(Interruptions)*...

श्री वसीम अहमद: मलकानी जी स्टेटमेंट से बाहर जा रहे थे, इसलिए हम खड़े हुए। आप बोल रहे हैं, उस पर हम बिल्कुल नहीं बोल रहे। जो सही है उस पर कहिए। उससे कौन मना कर रहा है।

SHRI SURINDER KUMAR SINGLA: Mr Wasim, don't you agree that the highest number of train accidents had taken place during Paswanji's regime? What has he done about it? What is the total number of accidents on major railway lines and routes?

6.00 P.M.

The second point is, one would like to know how many reports reached you and

whether these accidents are actually monitored or not. Don't blame signalling. This is not the first accident. What have you done in the last accident which took place? One would like to know about it. The House is worried. In every session, an accident is being reported to the House and the country. I know that you are a very careful and a very senior leader of your party and the United Front Government rail is not moving due to internal sabotage, bomb blasts from outside to the Ministry and you are looking after it very much. Fine, look after it. But, attend to these railway accidents. Madam, I would like to understand what steps he has taken from the day the first accident took place. How is he going to deal with it? One would like to have an assurance from the hon. Minister if he is serious about it. Or is he serious only about making a statement and challenging the whole world that he has been answering every Member? If I remind him what he has done to my suggestion, his challenge would fail. I would choose another occasion to tell this because I don't want to devalue this particular issue of accidents which are taking place in a large number. Madam, if he is very serious, then let him show this seriousness by shifting out of the Ministry. Then the country would know that he is taking every accident of railways very seriously. Let him resign. He should say, "I am serious. I will not continue." Or let him show the other seriousness which he want to show. I want to have conviction, seriousness. Mr. Dasgupta was absolutely correct today. He pinpointed a number of facts. He was really...

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARDE): Please conclude. ...*(Interruptions)*...

SHRI SURINDER KUMAR SINGLA: I entirely agree with him.

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARDE): Singlaji, there are many speakers after you. ...*(Interruptions)*...

SHRI SURINDER KUMAR SINGLA: The number of accidents is increasing alarmingly and railway journey which was the safest is now becoming the most unsafe in this country. Let him compare his performance with all earlier Ministers.

SHRI NILOTPAL BASU (West Bengal): Why unnecessarily?

SHRI SURINDER KUMAR SINGLA: Let him not really stick to the Faridabad accident. It is not the first. Had it been the first, things would have been different. It is being repeated every time. The fact of the matter is, he is not monitoring. As Shastriji said, if he is to share the credit that his Ministry is doing this and that, then let him share the blame also. That is the point where a sense of responsibility is exhibited. So, my whole point is, let him tell how many accidents took place in the last one year, which are the major trains that suffered accidents, which are the major lines that had accidents and what he is going to do if he is not resigning on his own. If it is a point to show the seriousness to the country, then he should resign in the interest of telling that he is serious. Thank you, Madam.

SHRI DIPANKAR MUKHERJEE (West Bengal): Madam, probably I will be on the other track. Firstly, accidents don't happen. Accidents are caused. There are always some causes. If I remember, in the other side also, a similar type of accident occurred about which Mr. Singla and others were telling, i.e., ramming of a stationary train by another train or a train colliding on the same track. It is repeating. My first and foremost request to the hon. Minister is कि जो लास्ट ऐक्सीडेंट हुआ है, उसकी रिपोर्ट आप मंगा लीजिए। Who was responsible for that? The first and second thing is कोई टेक्नौलोजी हिंदुस्तान में ऐसी नहीं है। हम इस पोज़ीशन में नहीं हैं कि हम डबल या ट्रिपल लाईन बना सकें। I am repeating what I had said one year back. We have to depend on carefulness of one driver. Human error of one single man affects the safety of thousands of people. How can it overshoot?

Mr. Minister, about the driver, what you are doing is all right. The second important question is that the Member (Traffic) should be issued a show-cause notice because he is the first man responsible for taking care of this aspect. An explanation can be had from him because he is responsible for all these things. If it is done, I think the hon. Minister will get mush more information than what he has given here. He must be asked as to why the same type of accidents, that is, ramming of one train into the other are taking place.

The third important aspect, as has been pointed out by Meenaji, is that in the preliminary *suo motu* statement it is not possible for the Minister or the Railway Board or whosoever it is, whether it is Member (Traffic) or somebody else, to find out the causes within two or three hours. The real reasons have to be found out. What we are lacking in is that we do not take follow-up action. I am sorry, Madam, that after ten or fifteen days, we would forget this accident. Nobody would talk of this accident. Madam, we have to identify the causes which lead to such accidents. We should analyse the reason. Otherwise someone will be talking of overshoot, someone may talk of derailment, someone may be talking of track circuit, etc. मेरे ख्याल से सबसे अच्छा यही होगा अगर यह एश्योरेंस मंत्री जी से हमको मिल जाए, वह रिपोर्ट यहां पहुंचा दी जाए।

This report may be given to those Members who are really interested in it, not to those who are not interested or who are interested only in blaming Ram Vilas Paswan. As a professional, I feel ashamed that such things can happen here in spite of so much technology being available with us.

ओवशूटिंग हुआ होगा, ड्राईवर देखकर चला गया।

Let us have this report here. Let us ensure that this ramming of trains on the same track will not be repeated on the Indian Railways next time. If we can do it, if we can ensure it, then we have done our job; otherwise, we have not done our job.

श्री राघवजी (मध्य प्रदेश): उपसभाध्यक्ष महोदया, बड़ी दुखद् घटना घटी है, जिसके लिए हम यहां सदन में सम्वेदना व्यक्त करते हैं और मिनिस्टर महोदय जांच आयोग की घोषणा करके अपने कर्तव्यों की इतिश्री मान लेते हैं। हर दुर्घटना से सबक सीखने की जरूरत है रेलवे को। मुझे डर है कि वह सबक सीखा नहीं जाता है और इसी के कारण दुर्घटनाएं बढ़ रही हैं। खास तौर से मध्य रेलवे की दुर्घटना की जांच करिए, इस महीने में बढ़ी हैं, इस साल में बढ़ी हैं और यह भी मध्य रेलवे की दुर्घटना है। मैं खुद इस रेलवे दुर्घटना से प्रभावित हुआ हूं क्योंकि मेरी ट्रेन जो कर्नाटक एक्सप्रेस दुर्घटनाग्रस्त हुई है उसके 3-4 घंटे पीछे चल रही थी। जब साढ़े पांच बज गए तो मैंने सोचा कि ट्रेन क्यों लेट हो गई है। तो लोगों ने कहा कि नहीं, वह तो दूसरे रास्ते से चल रही है, इस रास्ते से आ नहीं रही है कोई दुर्घटना हो गई है।

इस दुर्घटना के कारणों में यह बताया गया कि होम सिगनल को इग्नॉर किया गया, शायद इसीलिए घटी हो लेकिन मैं माननीय मंत्री जी से जानना चाहता हूं कि दो ट्रेनों के आपस में टकराव को रोकने के लिए कई प्रकार की सावधानी रेलवे बरतती है क्योंकि यह सबसे खतरनाक और गंभीर दुर्घटना मानी जाती है। आगे वाले गाड़ी से पीछे वाली गाड़ी न टकराए तीन प्रकार की सावधानियां होती है। पिछले स्टेशन से ट्रेन को आगे नहीं बढ़ने दिया जाए नम्बर एक। दूसरा, जिस स्टेशन पर पहुंच रही है वहां आउटर सिगनल होता है, वहां पर गाड़ी को रोका जाता है। अगर वह भी क्रोस हो गई तो तो फिर होम सिगनल होता है वहां पर रोका जाता है। यह तीन-तीन सावधानियां कैसे पार होकर ड्राईवर यहां तक आ गया, यह मैं जानना चाहता हूं क्योंकि होम सिगनल का इसमें जिक्र हुआ है लेकिन बाकी की दो सावधानियों का क्या हुआ, यह मैं जानना चाहता हूं? कर्नाटक एक्सप्रेस में दो इंजन थे। जब दो इंजन थे तो दो ड्राईवर भी होंगे। तो दोनों ड्राईवर का क्या हुआ? आपने कहा है कि एक ड्राईवर दुर्घटनाग्रस्त हुआ है। दूसरा ड्राईवर जिन्दा है या समाप्त हो गया, क्योंकि कुछ समाचार पत्रों में छपा है कि दूसरे ड्राईवर की मौत हो गई है। मैं इस मामले में भी स्पष्टीकरण चाहता हूं कि दोनों ड्राईवर का क्या हुआ? फिर कर्नाटक एक्सप्रेस सबसे ज्यादा दुर्घटनाग्रस्त हुई है, क्योंकि दो इंजन उल्टे और सात बोगियां भी उलट गईं। फिर भी आपने अपने

स्टेटमेंट में इस बात का जिक्र नहीं किया कि कर्नाटक एक्सप्रेस के कितने लोग इसमें मारे गए। अगर उसकी सात बोगियां उल्टी हैं तो उसके भी कुछ यात्री मरे होंगे। लेकिन आपने केवल हिमसागर एक्सप्रेस के 12 यात्री मारे गए, इस बात का जिक्र किया है। कर्नाटक एक्सप्रेस के एक भी यात्री के बारे में कुछ भी आपके स्टेटमेंट में नहीं कहा गया। मैं बहुत साफ तौर पर जानना चाहता हूं कि क्या कर्नाटक एक्सप्रेस के सारे यात्री सुरक्षित हैं। फिर अगली बात जो इसमें मुआवजे की बात कही है, मुझे जहां तक याद है, भटिंडा बम विस्फोट में जो दुर्घटना हुई थी, उसके बाद आपकी स्टेटमेंट थी कि रेल यात्रा में मृत व्यक्तियों के परिवार को चार लाख रुपये की क्षतिपूर्ति दी जाएगी। आपने इसमें लिखा है कि अधिकतम दो लाख दिया जाता है। मैं इस बारे में भी स्पष्टीकरण चाहता हूं कि आपकी पहले वाली स्टेटमेंट सही है अथवा यह सही है यह जो विसंगतियां हैं, इन विसंगतियों के बारे में आप जवाब दें। अब तो रेल यात्रा करना बहुत खतरनाक लगने लगा है। मैं तो हफ्ते में दो-तीन रातें ट्रेन में गुजारता हूं तो हम जैसे यात्रियों का क्या होगा। हो सकता है कि आपको सदन में श्रद्धांजलि देनी पड़े। धन्यवाद।

उपसभाध्यक्ष (कुमारी सरोज खापर्डे): आप ऐसा क्यों कह रहे हैं?

PROF. RAM KAPSE (Maharashtra): Madam, about the report to be submitted to the House, I think, an assurance from the hon. Minister is required. Everybody is asking for the report. At least, the interim report which he is expecting within a week...

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARDE): Let the other hon. Members also seek clarification.

PROF. RAM KAPSE: No, no. He has...

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARDE): He has not responded to the questions of the Members of Parliament. I mean, how will he?

PROF. RAM KAPSE: At least, he can assure the House....

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARDE): He will assure when he responds to the clarifications sought by the hon. Members.

SHRI N. THALAVAI SUNDARAM (Tamil Nadu): Madam, this is not for the first time that a railway accident took place. The accidents are increasing day by day. *Prima facie* over-shooting of the signal appeared to be the cause for the accident. As far as signal is concerned, our learned friend, Shri Gurudasji rightly said that there is substandard equipment in the railway. I appreciate that the hon. Railway Minister is travelling by train. Madam, the hon. Railway Minister, when visited Chennai, travelled in the Kanyakumari Express; hence, I need not explain to him again about the condition of the compartments. I am very sorry to inform the hon. Railway Minister that this is not the first time, this is the seventh time I am representing to the hon. Minister about the compartments of the Kanyakumari Express which are in a worst condition. Yesterday we were travelling in the Kanyakumari Express. This is rainy season, as everybody knows it, and the entire rainwater comes into the compartment. Madam, another point is...

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARDE): Mr. Sundaram, we are seeking clarifications on the accident which took place between the Himsagar and the Karnataka Expresses.

SHRI N. THALAVAI SUNDARAM : Madam, all trains leaving from Kanyakumari are always delayed. More than seven or eight trains are leaving from Kanyakumari to Chennai, Jammu Tawi, Mumbai and other places. How did the accident take place? You cannot stop accidents by simply suspending a driver. This accident took palce purely because of the poor performance of the technical staff of the railways. Hence, I request the hon. Railway Minister to take necessary steps for improvement of the advanced technology available for signals, compartments and engines of the railway.

SHRI VAYALAR RAVI: Madam, we do have a tradition of Lal Bahadur Shastri and others. As a protest against the inefficient running of the Ministry and the refusal of Mr. Paswan to own moral responsibility, I am not seeking any clarification. Let him preside over a bunch of murderers called the Railway Board. It is a murderer sitting there.

SHRI GURUDAS DAS GUPTA: Madam, we are equally perturbed and we also feel equally that somebody has to take the responsibility. But, for a Member of the standing that Mr. Vayalar Ravi is having in this House...*(Interruptions)*... He called the hon. Minister a murderer... *(Interruptions)*...

SHRI VAYALAR RAVI: I never called him a murderer...*(Interruptions)*...

SHRI · SURINDER KUMAR SINGLA: Let the hon. Minister reply ...*(Interruptions)*...

SHRI VAYALAR RAVI: Madam, I never called him a murderer. I never called him so. I said that he is presiding over a bunch of murderers, the Railway Board.

श्री मूलचन्द मीणा: मैडम, गुप्ता जी को अलाऊ किया जाए।

उपसभाध्यक्ष (कुमारी सरोज खापर्डे): मैंने आपको अलाऊ किया।

SHRI VAYALAR RAVI: Madam, I never made any derogatory remarks against the hon. Minister. I never called him so. I only said that there is a bunch of murderers called the Railway Board. If it is offending, I am withdrawing my remarks.

श्री संजय निरुपम (महाराष्ट्र): मैडम, मैं सबसे पहले आपके माध्यम से मंत्री महोदय को बताना चाहता हूं कि कि कल रात 11 बजे फरीदाबाद में जो ट्रेन दुर्घटना हुई, उस दुर्घटना से मैं भी प्रभावित हुआ। मैंने 11 बजे के आस-पास ललितपुर में सदर्न एक्सप्रेस ली। यह ट्रेन यहां 5 बजे पहुंचने वाली थी लेकिन इस दुर्घटना की वजह से वह तकरीबन 10 घंटे लेट पहुंची। एक तो मैं आपको यह जानकारी देना चाहता हूं और उसके बाद मैं एक छोटा सा स्पष्टीकरण पूछना चाहूंगा।

मैडम, स्टेटमेंट के दूसरे पैरे में मंत्री महोदय ने कहा है कि जो इस दुर्घटना में मारे गए हैं उनके परिजनों को 20 हजार रुपया मुआवजा दिया जाएगा। मेरी समझ में नहीं आता कि 20 हजार रुपयों से आज के दिन में क्या होगा।

उपसभाध्यक्ष (कुमारी सरोज खापर्डे): मि० मीणा, मि० सिंगला और मि० वसीम, तीनों अपनी अपनी जगह पर जाएं ताकि बाकी लोग बोल सकें।

श्री संजय निरुपम: मैडम, ये सब सीनियर मेंबर हैं। ये लोग हमेशा नये लोगों को डिस्टर्ब करते हैं।

उपसभाध्यक्ष (कुमारी सरोज खापर्डे): नहीं, नहीं। नये लोगों को डिस्टर्ब करने की उनकी भावना नहीं है। हम उम्र जब इकट्ठे बैठते हैं तो ऐसा ही होता है। इसीलिए मैंने उनको कहा कि वे अपनी अपनी सीटों पर चले जाएं।

श्री संजय निरुपम: मैडम, मेरा मंत्री महोदय से यह सवाल है कि फरीदाबाद में जो रेल दुर्घटना हुई, उसमें जो मृतक हैं...

उपसभाध्यक्ष (कुमारी सरोज खापर्डे): वसीम साहब, आप अपनी सीट पर जाएं।

श्री संजय निरुपम: मैडम, मंत्री जी ने मृतकों के परिजनों को 20 हजार रुपया देने की जो घोषणा मुआवजा राशि के तौर पर देने के लिए की है, वह बहुत ही कम है। जब हवाई दुर्घटना होती है तो दो-चार लाख रुपये हम देते हैं। अभी मुंबई में दलितों पर जो फायरिंग हुई उसमें जो मारे गए हैं उनके लिए महाराष्ट्र सरकार ने दो लाख रुपए मुआवजे की राशि देने की घोषणा की है। इसलिए मैं मंत्री महोदय से मांग करूंगा कि जो लोग इस दुर्घटना में मारे गए हैं, उनके परिजनों को भी कम से कम दो लाख मुआवजा दिया जाए क्योंकि जान की अलग अलग कीमत नहीं हो सकती। हवाई दुर्घटना में जो लोग मारे जाएं उनकी जान बहुत कीमती है और रेल दुर्घटना में जो लोग मारे जाएं उनकी जान बड़ी सस्ती है, इस तरह की भेदभाव नहीं होना चाहिए, ऐसी धारणा नहीं रखनी चाहिए। यही क्लेरीफिकेशन मेरा है।

SHRI TRILOKI NATH CHATURVEDI (Uttar Pradesh): Thank you, Madam Chairperson. Since morning hon. Members have expressed in the House their own anguish, their own agony and

the agony of the country about the increasing railway accidents and particularly with reference to the accident under consideration at the moment. I have to submit that over the years the Railway Ministry or the Railway Board has acquired the expertise ...*(Interruptions)*...

उपसभाध्यक्ष (कुमारी सरोज खापर्डे): निरुपम जी, मंत्री जी को डिस्टर्ब मत कीजिए। मेंबर बोल रहे हैं।

SHRI TRILOKI NATH CHATURVEDI: Summarising the reason or the cause of the accident, the whole approach has become mechanistic. We have got completely desensitized. Everytime one or two reasons from that basket of reasons are picked up and incorporated in the statement which the Minister gives to the House. Thereafter usual cliches are given that the Commissioner for Railway Safety has been dispatched, the condolences of the entire House are with the bereaved family, etc., etc. are repeated. Whom are we deceiving? Ourselves or the countrymen? Are we acting with any sense of responsibility? That is why it is correctly said that we just discuss and then forget. We are completely insensitive to the human sufferings. The credibility of the Railway Board and the Railway Ministry and the working of the Railways which was one of the best—and still, I think, it can be maintained as one of the best—is at stake. That is why I would like to ask three simple questions. My first question for clarification is a very small one. From the statement it is apparent that the hon. Minister and the senior officers of the Railway Board reached the site of accident in the morning. I would like to know, since Faridabad is not very far away, when did the General Manager of the Central Railway, or, in his absence, any other officer, reach the site of the accident before the Minister, to ensure that whatever arrangements were possible at that moment of time were made?

My second query is this. These two trains, i.e. the Karnataka Express and the Himsagar Express, are very important express trains. This is also the rainy season. Every year, in this season, we have floods and the consequent delays in the running of trains. When two such important trains were running, one of them twelve hours late, was it not necessary that major precautions were taken; to find out whether there were, at that time, other tains on the route, etc? When the train was delayed for over twelve hours, was it not necessary that utmost care and caution were observed so that we were able to avoid this kind of an accident? Or, is it that a routine approach is adopted? Trains may be late by twelve hours, thirteen hours; it does not make any difference. When a train is twelve hours behind schedule, the people might have even forgotten that the train was yet to arrive! Are not precautions taken for such inordinate delay?

The third clarification which I would like to seek is: everytime, we hear that the Commissioner for Railway Safety had been rushed to the spot, that he would hold an enquiry. The Minister assures that it would be time-bound; within a week, at least, an interim report would be given, etc. My misgiving here—everybody in this House feels the same way; very often, this misgiving has been articulated—in that the Commissioner for Railway Safety is an officer under the Railway Board. Therefore, he can never give an independent report, holding senior officers responsible, as regards the acts of omission, commission and neglect of the essentials, a reference to some of which was made by my friend, Mr. Gurudas Das Gupta.

The question is: why should you not set up a permanent or a standing Commission which goes into the cause of these accidents, gives a report which comes to Parliament; then, the monitoring and the follow-up of that is done through Parliament, with the

26—472 GIPMR/98

Railway Board ensuring that those recommendations are actually carried out so that the confidence of the people in the Railways is restored? Actually, such unfortunate accidents shake the confidence of the travelling public.

Madam Chairperson, without taking any more of your time, with a sense of responsibility and with a seriousness which the occasion deserves and demands, I have a suggestion to make to the hon. Minister. He is a very overburdened person. I am not referring to the political matters at all. His is a big Ministry The responsibility is so diverse. Ithink he needs some help. Whom he chooses is a different matter. But I think it is high time he has another person to assist him. If nobody else, at least, from this House, Mr. Wasim Ahmad would be readily available to him as a stalwart for support at all times; at least, in this hour of distress for this House, for the country.

Thank you Madam.

SHRI SURINDER KUMAR SINGLA: Tell Mr. Gujral.

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARDE): Shri Satish Pradhan, please.

श्री सतीश प्रधान (महाराष्ट्र): उपसभाध्यक्ष महोदया, मैं आपके माध्यम से माननीय मंत्री जी से दो चीजें जानना चाहता हूं, स्पष्टीकरण चाहता हूं। मैं एक बात यह जानना चाहता हूं कि जब यह ओवर-नाइट ट्रेस चलती है खास कर के आठ-आठ दस-दस और बारह-बारह घंटे लेट हो जाती हैं तो ड्राइवर्स को चेंज करने के लिए क्या सुविधा उपलब्ध है और वह ठीक ढंग से कार्यान्वित होती है या नहीं? इस ट्रेन के विषय में इस बारे में क्या हुआ। दूसरा मैं जानना चाहता हूं कि ये ड्राइवर जो हैं उनके लिए रेस्ट रूम आपने जगह जगह पर बनाकर रखे हैं, उनकी स्थिति क्या है। वहां सोने के लिए कुछ व्यवस्था नहीं रहती, बैठने के लिए पूरी व्यवस्था नहीं रहती और वहां इतनी भीड़ रहती है कि उधर बैठ भी नहीं सकते हैं। इस हालत में उनसे किसी ढंग की कार्यक्षमता की अपेक्षा रखते हैं, इस विषय पर आप जरा प्रकाश डालें तो मैं आपका आभारी रहूंगा। धन्यवाद।

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARDE): May I now request the hon. Minister to respond to the hon. Member's queries?

श्री राम विलास पासवान: उपसभाध्यक्ष महोदया, सबसे पहली बात जो इस दुर्घटना से संबंधित है उस पर मैं दो तीन बातें कहना चाहता हूं। पहली बात यह कही गयी कि जो ट्रेन थी कर्नाटक एक्सप्रेस वह 17 घंटे लेट थी। मैंने अपनी रिपोर्ट में कहा है 12 घंटे। 11.00 ए॰एम॰ पर पहुंचने का इसका समय होता है और 11.00 पी॰एम॰ पर वह पहुंची है तो अब 12 घंटे है कि 17 घंटे है उसका हिसाब लगाया जा सकता है। मेरे हिसाब से जो वह 12 घंटे ही हुई। पहली बात यह है। दूसरा कहा गया कि हमने कहा है कि हिमसागर एक्सप्रेस के 12 लोग मरे हैं। मैं हिंदी, अंग्रेजी दोनों का अपना वक्तव्य देख रहा था उसमें लिखा हुआ है इस दुर्घटना में हिमसागर एक्सप्रेस के गार्ड सहित 12 लोग। अंग्रेजी में है—

"In this accident, as per the latest reports 12 persons including Guard of Himsagar Express have lost their lives."

This does not mean that all the twelve persons belonged to the Himsagar Express.

लेकिन गार्ड जो मरा है वह हिमसागर एक्सप्रेस का मरा है और जो ये 11 लोग हैं उन लोगों के संबंध में मैंने जैसा कहा कि 5 लोगों की सूची मेरे पास है—आइडेंटीफिकेशन हो गयी है और अभी 6 लोगों का आइडेंटीफिकेशन नहीं हुआ है। उनका हम आइडेंटीफिकेशन करके और जितने लोग घायल हुए हैं उनका मैं कल इस सदन में आपके माध्यम से पेश कर दूंगा जिससे सब माननीय सदस्यों को वह मिल जाएगा। तीसरा ड्राइवर का उठाया गया। मैं फिर कहना चाहूंगा कि मैंने फिर रिपोर्ट मंगवायी यह 12 घंटे गाड़ी जो लेट हुई वह किसी दूसरे कारण से नहीं बल्कि जो मध्य प्रदेश में बाढ़ की स्थिति उत्पन्न हो गयी है जिससे कई जगह पर ट्रेक्स बह गए, उसके कारण हुई। जैसा कि मैंने जिक्र किया है अपनी रिपोर्ट में कि खंडवा और इटारसी खंड पर भारी वर्षा के कारण ट्रेक प्रभावित हुए, बह गए उसके कारण से घुमाकर आना पड़ा। लेकिन जो ड्राइवर या इस ड्राइवर के लिए मैंने पता लगाया इस बात का कि कितने घंटे से गाड़ी चला रहा था तो उसमें मालूम हुआ कि इस ड्राइवर की जो बदली हुई थी वह केवल तीन साढ़े तीन घंटे पहले उसकी बदली हुई थी। वह

बात मेरे दिमाग में भी थी कि हो सकता है कि एक ही ड्राइवर हो वह चलता रहे और उसके बाद उसको नींद आने लगे वह परेशान हो जाए लेकिन वह भी बात नहीं थी। वह समय केवल 3 घंटे था..(**व्यवधान**) एक मिनट पहले मेरी बात सुन लीजिए

श्री सतीष प्रधानः मंत्री जी में इसी विषय पर कहना चाहता हूं। आपने बताया कि केवल तीन घंटे उसको ड्यूटी पर चढ़े हुए थे। लेकिन वह ड्यटी पर चढ़ने के लिए इंतजार पहले से कितने घंटे से कर रहा था वह भी बात बताएं।

श्री राम विलास पासवानः ये सारी चीजें तो रिपोर्ट में जब जांच होगी तो वह जांच वाले बताएंगे। मैं जो आपने प्वाइंट उठाया उसके लिए कह रहा हूं। तीसरी चीज है, आपने कहा कि बंगलौर एक्सप्रेस में दो इंजन हैं और दो इंजनों के दो ड्राइवर हैं। वह इंजन इलेक्ट्रीफाइड था इसलिए एक ही ड्राइवर उसमें काम करता था, एक असिस्टेंस ड्राइवर और है। मैं जब मिलने के लिए गया तो जो मेन ड्राइवर है एलिफ वह तो बेहोशी की हालत में था लेकिन जो असिस्टेंट ड्राइवर है वह होश में था बढ़िया तरीके से बातचीत कर रहा था। मैंने उससे सारी चीजों के संबंध में पूछा। जो कह कहा गया—राघवजी ने यह प्वाइंट उठाया कि एक आउटर सिग्नल होता है और एक होम सिग्नल होता है।

अगर आउटर सिगनल पर रेडलाइट देख लिया होता और फिर होम सिगनल पर यह किया रहता, तो आपका कहना बिल्कुल सही है। वह सवाल मैंने स्वयं उनसे पूछा है उसने कहा हमको कि हम बार-बार उसको रोक रहे थे। जब हमने रेड लाइट देखा तो मैं बार-बार कह रहा था कि साहब आगे रेड लाइट है और गाड़ी बहुत ही तेज किए हुए हो, उसको रोको उसको धीरे करो, उसको धीरे करो। लेकिन उसने हमारी बात नहीं मानी।

एक और वह प्वाइंट है जो आप लोगों ने शायद उसका जिक्र किया है जिसका मैं स्वयं पता लगाने की कोशिश कर रहा हूं और हो सकता है कि माननीय सदस्य ने जिक्र भी किया हो कि एक ही स्टेशन पर, जब गाड़ी उधर से कर्नाटक एक्सप्रैस आ गई या आ रही है और दूसरी गाड़ी उसी समय में स्टेशन से खोल दी गई तो वह क्यों खोली गई? क्या कोई आपस में तालमेल नहीं था? बल्लभगढ़ स्टेशन बगल में था। बल्लभगढ़ स्टेशन से फरीदाबाद स्टेशन के बीच कोई कम्युनिकेशन गैप था या तालमेल नहीं था। यदि तालमेल था तो उस गाड़ी को क्यों खोला गया। उसके जवाब में हमको बतलाया गया कि जैसे बम्बई का जो सब अर्बन एरिया है और वह काफी बिज़ी है दो मिनट के इंटरवल पर गाड़ी चलती है। वही हालत वहां फरीदाबाद से दिल्ली तक की भी है। यहां हमेशा एक गाड़ी के बीच दूसरी गाड़ी का ड्यूरेशन कम रहता है। लेकिन यह बात भी जांच करने लायक है। जो मेरे समझ से उसमें अवश्य ही जांच करने की आवश्यकता पड़ेगी। उसी तरीके से अब आपने बतलाया कि जनरल मैनेजर कब गए। उसका भी मेरे पास पूरा का पूरा रिपोर्ट है। उस रिपोर्ट के मुताबिक डी॰आर॰एम॰ वहां पर एक बजे पहुंचे, एडीशनल जनरल मैनेजर 1.30 बजे पहुंचे, जनरल मैनेजर वहां पांच बजे पहुंचे। सी॰आर॰बी॰ 9.00 बजे पहुंचे। अब आप कह सकते हैं कि इतना लेट जाने में क्यों हुआ। इसलिए मैं कभी-कभी कहता हूं कि डीसैन्ट्रलाइजेशन आफ् पावर होना चाहिए। जब डी-सैन्ट्रलाइजेशन की बात करते हैं तो हमको बहुत ही अटैक भी किया जाता है। अब जनरल मैनेजर यदि कोई बाम्बे में है, और यह जो फरीदाबाद है वह हमारा नार्थर्न रेलवे से नहीं होता है। यदि फरीदाबाद दिल्ली से ज्यूरिसडिक्शन हो तो पांच मिनट में पहुंचा जा सकता है। लेकिन यदि मान लेते हैं कि उसको पहुंचाना पड़े, यहां का हमारा स्टाफ पहुंच लेगा, लेकिन जब जनरल मैनेजर, जिनके अधिकार क्षेत्र में यह है या कहीं झांसी से डी॰आर॰एम॰ को आना होगा तो स्वाभाविक है कि उसके लिए समय लगा और जिसके लिए माननीय सदस्य ने जो क्रिटीसाइज़ किया है मैं समझता हूं कि उनका क्रिटीसिज़्म भी इस मामले में वैलिड है। इसलिए मैं अभी भी कहना चाहूंगा कि जब तक हम रेलवे के यूनिट्स को छोटा नहीं करेंगे, जब तक कि उसके ज्युरिसडिक्शन को जल्दी सी जल्दी पहुंच वाले इलाके में नहीं लाने की कोशिश करेंगे तो जो संबंधित अधिकारी हैं उनको पहुंचने में हमेशा विलम्ब हुआ करेगा। चूंकि यह 11 बजे रात की घटना यदि है तो 11 बजे रात की घटना के बाद यदि कोई पहुंचना भी चाहे बाम्बे से जो वह प्लेन से ही तो पहुंच सकता है दूसरा तो कोई रास्ता है नहीं। अब आपने हमारे संबंध में चार्ज लगा दिया कि हम काश्मीर गए थे। इससे तो लगता है कि काश्मीर कोई भारत का अभिन्न अंग है ही नहीं। काश्मीर हम गए थे तो किसी काम से गए थे। वहां पर हम कोई डल लेक में घूमने के लिए नहीं गए थे या फिर सैर करने के लिए नहीं गए थे। हम काश्मीर में गए थे बारामुला में, गाजीपुर में रेलवे लाइन बिछाने के लिए और उसका उद्घाटन समारोह था। मैं इस बात को पूरी जिम्मेवारी के साथ कह सकता हूं कि यदि काश्मीर के बारामुला से ले करके गाजीपुर से होते हुए और उधमपुर के इलाके से यदि हम रेलवे लाइन को

जोड़ देंगे तो वह देश का अभिन्न अंग ही नहीं रहेगा बल्कि जो एक्स्टरीमिस्ट्स की समस्या है वह 90 परसेंट वहां दूर हो जाएगी और इसके लिए मैं वहां कल गया था। किसी दूसरे परपज़ से नहीं गया था। हां, प्रधान मंत्री जी जब जाते हैं तो बहुत सारा कार्यक्रम रहता है। लेकिन जो प्रमुख कार्यक्रम था वह बारामुला में और गाजीपुर में रेलवे लाइन के उद्घाटन का था। उस काम के उद्घाटन में हमने कहा कि 4-5 जगहों पर काम कल से ही शुरु हो जायेगा। स्टेट गवर्नमेंट का कोआर्डिनेशन, सैन्ट्रल गवर्नमेंट की दोनों की एक कमेटी हम लोगों ने बना दी जिससे कि कोई तरह की वहां दिक्कत नहीं हो। इसलिए यह दूसरी बात है। तीसरी बात मैं आपका बहुत शुक्रगुजार हूं कि आपने उस प्वायंट को उठा दिया रेलवे मंत्री की हैसियत से ठीक है, मान लेते हैं कि अब हम लोग गरीब घर में पैदा हुए हैं। जितना आपको कहना है उतना आपको कहने का पूरा का पूरा अधिकार है। लेकिन मैं आप से एक बात कहना चाहता हूं कि हम हर संभव कोशिश करते हैं कि जहां तक संभव हो वहां तक हम रेलवे से घूमने की कोशिश करते हैं। उपसभाध्यक्ष महोदया, हम तो गरीब परिवार में पैदा हुए हैं। हमारे बाप और माता ने कभी सैलून देखा है? मंत्री पद से हटने के बाद हम सैलून नहीं देखेंगे। मलकानी जैसे लोगों को सैलून हमेशा नसीब होता रहेगा, लेकिन हमारे जैसे लोगों को सैलून नसीब नहीं होता है। हम लोग जिस क्लास में पैदा हुए हैं, उसी क्लास में हम चलना भी पसंद करते हैं और महोदया हम घूमते भी हैं। कानपुर में हम ने सब से बड़े अफसर को जब सस्पेंड किया था तो हम सेकंड क्लास में घूम रहे थे, पटना में भी जब सस्पेंड किया तो हम सेकंड क्लास में घूम रहे थे।

उपसभाध्यक्ष महोदया, मैं कड़ाई करने का भी काम करता हूं, लेकिन हम को नहीं कहना चाहिए कि जब हम कड़ाई करने का काम करते हैं तो हम को कहां-कहां से प्रेशर आने लगता है, वह हम भी जानते हैं। इसी संसद भवन की कैंटीन में जहां सब माननीय सदस्य खाना खाते हैं जब हम ने एक दिन अटेंडम जाकर देखा और जहां वी०वी०आई०पी० बैठते हैं, वहां गंदा खाना पाया और ऊपर डिवीजनल कॉमर्सियल मैनेजर से लेकर चीफ कैटरिंग मैनेजर और हैड कुक तक को सस्पेंड करने का काम किया तो हमारे माथे पर कितना प्रेशर पड़ा, वह हम जानते हैं। जब इटारसी में हम ने उन को गलत कार्य करते पकड़ा, सीधे डिसमिस कर दिया और एक कंपनी को ब्लैक लिस्ट में रख दिया तो हमारे ऊपर कितना प्रेशर आने लगा, वह हम जानते हैं। आज हम ट्रांपेरेंसी लाने की कोशिश कर रहे हैं पूरे-के-पूरे रेलवे बोर्ड में जहां कि 7 हजार करोड़ रुपए की खरीद-विक्रया है। आप चले जाइए दिल्ली के प्रगति मैदान में और देखिए कि 7 हजार करोड़ रुपए का कहां से खरीद-विक्रय होता है, कौन-कौन आयटम खरीदा गया है, कौन-कौन सिंगल आयटम में खरीदा गया है और कौन-कौन ओपन आयटम में खरीदा गया है कोई कंपनी उस से कम में पाने का काम करे तो हम को उस के लिए कितना जूझना पड़ रहा है, यह हम जानते हैं। लेकिन हम ने भी प्रतीज्ञा की है कि हम रेलवे बोर्ड के अंदर ट्रांपेरेंसी लाकर रहेंगे और इस साल के अंदर में आप को बतलाना चाहता हूं कि हम कम-के-कम 10 परसेंट दाम घटाने का काम करेंगे और चाहे सेल की बात हो, चाहे बी०एच०ई०एल० का मामला हो, चाहे किसी का मामला हो हम रेलवे के मुनाफे और क्वालिटी के साथ किसी प्रकार का समझौता करने वाले नहीं हैं। हम यह बता देना चाहते हैं कि इस के लिए हम ने ट्रांपेरेंसी की एक पॉलिसी बनायी है। हम समझते हैं कि जहां इस ट्रांसपेरेंसी से रेलवे को मुनाफा होगा वहीं हम क्वालिटी में भी वृद्धि का काम करेंगे। इसी तरह आप ने कहा कि लंबी दूरी की गाड़ी में स्टॉपेज बढ़ा है। उपसभाध्यक्ष महोदया, जब हम राज्य सभा में डिस्कसन करते हैं तो पालिसी पर ज्यादा बोल लेते हैं, लेकिन जब दूसरे हाउस में जाते हैं तो हम मेंबर आफ पार्लियामेंट को अपनी कांस्टीटुएंसी सामने नजर आती है। कोई कहता है हमारा डिस्ट्रिक्ट हैडक्वार्टर है, कोई कहता है हमारा स्टेट हैडक्वार्टर होता है और कोई कहता है हमारा रीजनल हैडक्वार्टर है, यहां गाड़ी क्यों नहीं रुकेगी, वहां गाड़ी क्यों नहीं रुकेगी? अब महोदया, रेलवे का अपना हैडक्वार्टर होता है। रेलवे का डिस्ट्रिक्ट अलग है। लेकिन जब माननीय सदस्य कहते हैं तो हम कोई ब्यूरोक्रेट तो नहीं हैं, हम तो आप के ही साथी हैं। आज इधर हैं तो कल उधर बैठ सकते हैं और आप कल इधर आइएगा। इसलिए हम से यह नहीं होता है। हम उस में बहुत कोशिश करते हैं, लेकिन मैं आप को बतलाना चाहता हूं कि इस के बावजूद भी हम को गाली सुननी पड़ती है। हम ने फिर भी बहुत डिस्करेज करने का काम किया है। इस के बावजूद भी लंबी दूसरी की गाड़ी, शताब्दी जैसी गाड़ी को भी रुकवाने के लिए हमारे ऊपर प्रेशर पड़ता है। इस के लिए मैं दोनों सदनों के सदस्यों से अपील करना चाहूंगा कि एक नियम बना दें और कम-से-कम इस मामले में रेलवे बोर्ड को छूट दे दें कि जो गाड़ी एक्सप्रेस है, वह एक्सप्रेस के मुताबिक, जो सुपर फास्ट है, वह सुपर फास्ट के मुताबिक चले और जो शताब्दी और राजधानी है वह उस के मुताबिक चले, तो मैं

समझता हूं कि इस मामले में हम को काफी सहूलियत हो जाएगी।

उपसभाध्यक्ष महोदया, बहुत से माननीय सदस्यों ने हमारे ऊपर अटैक किया कि राम विलास पासवान जब से मंत्री बने हैं तब से रेल दुर्घटना में काफी वृद्धि हुई है। हमारे साथी सिंगला जी, बहुत लायक दोस्त हैं, लेकिन दोस्त हैं लेकिन एक्सीडेंट और इंसीडेंट में कोई अंतर है कि नहीं? हम तो अंग्रेजी नहीं जानते, लेकिन आप ने सब चीज को हमारे माथेपर जोड़ दिया। आप ने भंटिडा का मामला भी रेलवे में जोड़ दिया और अंबाला का मामला भी जोड़ दिया।..(**व्यवधान**)...रेलवे प्रोटेक्शन फोर्स कुछ नहीं कर सकता है यदि आप मेंबर आफ पार्लियामेंट हैं और कानून जानते हैं। सी०आर०पी० है, सी०एस०एफ० है तो आर०पी०एफ० उस में कुछ नहीं कर सकता। दूसरी बात यह है कि आजकल एक टैकनीक निकला है, हम गए थे कोकराझार, वहां हमने क्या देखा कि डेढ़ किलोमीटर तक लंबा तार बिछाए हुए हैं और उस लंबे तार से जिस भी डिब्बे को चाहा आ०डी०एक्स० लगाकर उड़ा दिया। हम और आप ज्यादा से ज्यादा यह कह सकते है कि आर०पी०एफ० पैट्रोलिंग करावाइए। अब हमारी पैट्रोलिंग गाड़ी आगे निकल गई, इंजन भी निकल गया और दूसरी जगह जाकर उन्होंने स्विच ऑफ कर दिया तो उस जगह का डिब्बा तो ब्लास्ट हो गया। इसलिए कहा कि फैडरल स्ट्रक्चर में हर जगह आज हर पार्टी की सरकार है और हमारी यह 62,000 किलोमीटर रेलवे लाइन है, जो कितनी ही स्टेट में पहुंचती है। अब यह आसान है कि आप रेलवे बोर्ड को गाली दे दीजिए, मिनिस्टर को गाली दे दीजिए, रेलवे बोर्ड के चेयरमेन को गाली दे दीजिए। गाली देना तो आसान है, लेकिन आप देखिए कि स्टेट के मातहत जो रोड है क्या वहां एक्सीडेंट नहीं होते? कौनसी स्टेट है, जहां दिनों दिन आजादी के बाद से हत्याओं में वृद्धि नहीं हो रही है?

महोदया, मैं आंकड़ों के साथ बताना चाहता हूं, मेरे पास आंकड़े मौजूद हैं। टक्कर, जहां वर्ष 1960-61 में 130 हुआ करती थीं, आज जाकर हमारे समय में पिछले एक साल में 36 हुई हैं। इसके पहले, हमारे आने के पहले 50,50 थी। उसी तरीके से पटरी से उतरने की घटना 296 थीं, हमारे समय में 286 रहीं। समपार दुर्घटना, रेलवे क्रोसिंग की वह 68 थीं और अब 65 हैं। मैं कोई जस्टीफिकेशन नहीं दे रहा हूं, मैं कोई बोलता नहीं हूं। हमारे लिए तो यह भी शर्म की बात है। यह जो घटना हो रही हैं, इससे कोई आदमी खुश नहीं हो सकता कि हम गिनती गिना रहे हैं कि उसके समय में इतनी हुई, हमारे समय में कम हो रही है और यह हमारे लिए बहुत खुशी की बात है। हम उसमें कोई क्रेडिट नहीं लेना चाहते। लेकिन, जहां हम क्रेडिट नहीं लेना चाहते, वहीं बार-बार बिना सोचे समझे पार्लियामेंट में क्वेश्चन करते हैं और पार्लियामेंट के क्वेश्चन के जवाब को उद्धृत करते हैं, वह भी मलकानी जी जैसे लोग, कम से कम आप इस बात को तो देख लीजिए, कम्परीजन तो कम से कम कर लीजिए कि वृद्धि हो रही है या घटौती हो रही है।

महोदया, इसी तरीके से पिछले पांच वर्ष के दौरान जो रेल दुर्घटनाएं हैं वह 1992-93 में 524, 1993-94 में 520, 1994-95 में 501, 1995-96 में 398 और हमारे समय में 381 हैं। मारे गए व्यक्ति, जो रेल दुर्घटना में मरे, वह 1993-94 में 179, 1995-96 मे 406 और राम विलास पासवान के समय में 82 रहे। इन 82 में से भी वह निकाल दीजिए, जैसा आपने कहा भटिंडा का कि उसमें मरे, जो कोकराझार में 33 लोग मरे और अंबाला में जो लोग मरे। मैं माननीय सदस्य को यह भी कहना चाहता हूं कि यदि कोई आदमी यह कहना चाहे कि यह रिपोर्ट गलत है तो आप प्रिवीलेज मोशन लाने के पूरे अधिकारी हैं, कोई भी मोशन लाने के लिए आपको पूरा का पूरा अधिकार है। आप ले आइए, लेकिन बिना सोचे समझे न बोलिए।

महोदया, 406 से यह संख्या 82 हुई और उसमें भी तीन घटना ऐसी हैं, जिसके लिए रेलवे जिम्मेदार नहीं है और वह दुर्घटनाएं हैं भटिंडा की, कोकराझार की और अंबाला की। इसके बाद भी यह कहा जा रहा है कि राम विलास पासवान जबसे आए हैं बाढ़ आ गई है, बाढ़ आ गई है। हां, डीरेलमेंट की घटनाएं हुई हैं और उसका कारण क्या है? सबसे बड़ा कारण यह है, जैसा आप विदेश से तुलना करते हैं ट्रेक की। जैसा अभी आप कह रहे थे, हमारे पास भी तीन-चार ट्रेक होते तो यह दुर्घटना न होती, लेकिन हमारे पास ट्रेक नहीं हैं। विदेश में चले जाइए, वहां हर चीज के लिए अलग ट्रेक हैं, गुडस ट्रेन के लिए अलग ट्रेक, पैसेंजर ट्रेन के लिए अलग ट्रेक, सुपर फास्ट के लिए अलग ट्रेक, लेकिन हमारे यहां एक ही ट्रेक है, जिस पर गुडस ट्रेन भी चलती हैं, पैसेंजर ट्रेन भी चलती है, राजधानी भी चलती है, शताब्दी भी चलती है। ट्रेक एक है और उस पर भी डिमांड बढ़ती रहती है कि और ट्रेन बढ़ाओ। हमारी जो पटरी हैं, वह भी ओवरएज हो रही हैं।

जो हमारे पास पुराने डिब्बे हैं, मैंने कई बार सदन में कहा है कि जो पुराने कोचेज हैं, उनको अगर हम स्क्रैप कर दें

तो एक-तिहाई गड़ियां कल से बंद हो जाएंगी। क्या हाऊस इसके लिए तैयार है कि गाड़ियों की संख्या हम घटा दें? बल्कि हमेशा गाड़ियों की संख्या बढ़ाने की मांग होती है और बढ़ानी भी चाहिए। हामरे पास रिसोर्सेज क्या है? जितने रिसोर्सेज हमारे पास हैं, उन्हीं से तो हम काम करेंगे। जितनी आप चीनी डालेंगे उतना ही तो शरबत मीठा होगा।

महोदया, मैं यह कहना चाहता हूं कि चाहे सिग्नलिंग का मामला हो , चाहे हमारे पास जो इक्विपमेंट्स हैं, उनका मामला हो, हम कहीं भी समझौता नहीं कर रहे हैं सेफ्टी के मामले में। जो मार्डन से मार्डन टेक्नोलोजी है, हम उसका इस्तेमाल कर रहे हैं। हम पुराने डिब्बे चलाते हैं, पुराने ट्रैक्स का इस्तेमाल करते हैं लेकिन इसके बावजूद हमारा जो इंस्पैक्शन का काम है, वह जारी रहता है लेकिन जब तक हम डबल लाईन या ट्रिपल लाईन नहीं बनाएंगे, उसमें हम वृद्धि नहीं करेंगे, तब तक मैं समझता हूं कि ऐक्सीडेंट्स की संख्या कम नहीं हो सकती है। ऐक्सीडेंट कैसे हुआ? एक गाड़ी आगे जा रही है, पीछे से दूसरी गाड़ी ने आकर टक्कर मार दी। अगर वह गाड़ी दूसरी लाईन पर होती तो शायद यह दुर्घटना नहीं घटती। इसलिए मैं कहना चाहता हूं कि जहां माडर्नाइजेशन का मामला है, इसमें भी हम कोशिश कर रहे हैं कि इसमें किसी तरह का समझौता सेफ्टी के मामले में न किया जाए।

महोदया, एक बात यह पूछी गई कि दुर्घटना होती है, जांच रिपोर्ट नहीं आती है। मैं आपको बताना चाहता हूं कि हमको कोई आपत्ति नहीं है। आप 11-12 या 15 सदस्य चले जाएं, हम तो इसका स्वागत करेंगे, हम कल ही आपके लिए व्यवस्था कर देते हैं और बड़े-बड़े अफसरों को आपके साथ भेज देते हैं, आप उनको लेकर घटनास्थल पर चले जाइए। घटनास्थल यहां से केवल आधे घंटे की दूरी पर है। आप वहां जाकर अपनी रिपोर्ट दीजिए। मैं तो सोच रहा था कि माननीय सदस्य इस पर चर्चा करेंगे कि इस तरह की दुर्घटनाओं को कैसे रोका जाए और उनको रोकने के क्या-क्या उपाय हो सकते हैं। उसके बाद अगर रेलवे मिनिस्टर आपके सुझावों को न माने तब आप हमें कहिए। लेकिन काटेगा खटमल और मारिए सिर को, यह क्या बात है। खटमल जब काटता है तो उसको डी॰डी॰टी॰ से मारा जाता है। हम तो जानते हैं कि ड्राईवर बेचारा आपके परिवार का नहीं होगा, मेरे ही परिवार का होगा। जहां तक उसको सस्पेंड करने की बात है, मैं कहता हूं कि यदि यह तय हो जाए कि दुर्घटना ट्रैक की खराबी से हुई है....(व्यवधान)...

SHRI VAYALAR RAVI: Madam, this is not a debate to justify an accident.

SHRI RAM VILAS PASWAN: Madam, no, no. I am not justifying the accident. . . .*(interruptions)*

SHRI VAYALAR RAVI: We are hearing him patiently. That is a different matter.. . .*(Interruptions)* But instead of sympathising with the people who died in the accident, he is justifying the accident. What message will go to the employees? A wrong message is going to the people. It is not correct. . . .*(Interruptions)*

SHRI SURINDER KUMAR SINGLA: In fact, he should have addressed himself to the issue about which the country is worried, about which the country is feeling anguished. Is he addressing himself to that issue? He is trying to justify the accident.

उपसभाध्यक्ष (कुमारी सरोज खापर्डे) : मुझे लगता है कि अभी मंत्री जी ने अपना जवाब पूरा नहीं किया है। आपने जो स्पष्टीकरण पूछा, उसका जवाब अभी पूरा नहीं मिला है आपको।

श्री सुरिन्दर कुमार सिंगला: ये सीरियसनैस तो शो करें कि मैं सीरियस हूं। कहां सीरियस हैं ये?

उपसभाध्यक्ष (कुमारी सरोज खापर्डे) : वे सीरियसली आपको जवाब दे रहे हैं। आप सुन नहीं रहे हैं।

श्री राम विलास पासवान: उपसभाध्यक्ष महोदया, मैं इससे ज्यादा सीरियस क्या हो सकता हूं कि मैं कहता हूं कि बी॰जे॰पी॰ के सदस्य, कांग्रेस पार्टी के सदस्य, सी॰पी॰आई॰ के सदस्य....(व्यवधान)...

श्री सुरेंन्द्र कुमार सिंगला: उससे क्या फर्क पड़ेगा? इसमें पार्टी का क्या सवाल है।

श्री राम विलास पासवान: मैं यील्ड नहीं कर रहा हूं। जब आपने हमारे ऊपर चार्ज लगा दिया, आपने पूरे के पूरे रेलेवे बोर्ड पर चार्ज लगा दिया, किसी ने यहां तक कह दिया कि क्रिमिनल लोग बैठे हुए हैं, मर्डरर लोग बैठे हुए हैं, आपको सी॰आर॰एस॰ के ऊपर विश्वास नहीं है, आप मांग कीजिए जुडिशियल इंक्वायरी की, हम वह भी कराने को तैयार हैं। आप क्या मांग करना चाहते हैं? किस तरीके से आप जांच चाहते हैं? हम आपको कहना चाहते हैं कि आप जिससे जांच करवानी हो

करवाइए और जो भी अफसर दोषी हों, रेलवे मिनिस्टर से लेकर ड्राईवर तक, उनको दंडित किया जाएगा।

तो हम तो तैयार हैं, हम इसमें कहां पार्टी लाना चाहतें हैं, कहां पौलिटिक्स लाना चाहते हैं। लेकिन जब आप किसी चीज को उठाते हैं, आप मेंबर आफ पालिर्ययामेंट हैं, आप रेस्पोंसिबिल हैं। कल आप इस पक्ष में बैठेंगे, कल को मिनिस्टर भी बनेंगे, आपके साथ भी यही सवाल किया जाएगा। इसलिए कैसे इस समस्या का निदान हो इसलिए इस बारे में हम तो सीरियस हैं और मैं कहना चाहता हूं कि आप हमको सजेशन दीजिए कि इसमें आप यह-यह काम कीजिए और इसके पहले जो एक्सीडेंट हुआ है उसके संबंध में आप पलिसी के रूप में यह-यह निर्णय लीजिए और जब हम वह न करें तब हमको आप दोषी ठहराएं। इसलिए मैंने कहा कि मेरे समझ से जितनी बातें आ रही हैं और इसीलिए मैंने सी॰आर॰एस॰ को कहा कि एक सप्ताह के अंदर अंतरिम रिपोर्ट दो। आपने कहा कि सी॰आर॰एस॰ तो रेलवे बोर्ड का है। लेकिन वह मिनिस्ट्री आफ सिविल एविएशन का है, इंडिपेंडेंट बॉडी है। कभी-कभी स्ट्रक्चर भी पास करता है। हम इसलिए उससे करवाना चाहते हैं कि जल्द से जल्द रिपोर्ट आ जाए और मैं विश्वास दिलाना चाहता हूं कि उसको जो रिपोर्ट आएगी हम सदन के पटल पर भी रखने का काम करेंगे। 28 अगस्त के बाद में उस रिपोर्ट को सदन में रखेंगे। यदि उससे भी आप संतुष्ट नहीं हैं, यदि आप चाहतें हैं कि उसके अलावा भी दूसरी इंक्वायरी ईस्टीट्यूट की जाए, एज ए रेलवे मिनिस्टर हमको कोई आपत्ति नहीं है इसलिए मैं सीरियशनैस के साथ कहना चाहता हूं। इसके बाद रेलवे के संबंध में जो जनरल बातें उठाई गई हैं उसके बारे में मैं इतना कहना चाहूंगा। मुआवजा के बारे में आपने कहा। यह बीस हजार रुपया दो लाख के अलावा है। यह एक्सग्रेसिया है। एक्सग्रेसिया का एमाउंट है - बीस हजार मृतक के लिए, दस हजार जो सीरियश इंजर्ड है और दो हजार रूपया जो माईनर इंजर्ड है। लेकिन जो इंश्योरेंस के माध्यम से मिलेगा वह 16 हजार से शुरू होता है माईनर इंजरी से और दो लाख रुपया तक जाएगा। मृतक के लिए वह है। उसके अलावा भी मैंने फाईल आगे बढ़ाया है। मैंने इंश्योरेंस कम्पनी को कहा कि मैं प्रीमियम बढ़ाने को तैयार हूं, दो लाख रुपया का पुराना रेट है, इसको दो लाख से चार लाख किया जाए। यह मामला विचाराधीन है। लेकिन जहां तक रेलवे का संबंध है जो इंश्योरेंस कम्पनी है उनको हमने कहा है कि इंश्योरेंस का जो पैसा देते हैं उसको हम डबल करने के लिए तैयार हैं, हम डबल करेंगे आप भी कम्पंसेशन को डबल करिए। यह मामला चल रहा है। मैं आपका ज्यदा समय नहीं लेना चाहता हूं। चाहें न्यू टैक्नोलोजी का मामला हो, ट्रेन के स्टाफ का मामला हो, मानिटरिंग का मामला हो, इंस्पेक्शन का मामला। यह सारे के सारे मामले आपने उठाए हैं। रेलवे का सप्लीमेंट्री बजट आएगा। मैं समझता हूं कि उसमें भी आप बहुमूल्य सुझाव देंगे लेकिन मैं इस घटना के संबंध में और जो घटनाएं हुई हैं में एज ए रेलवे मिनिस्टर आपको कह सकता हूं कि जब हम सवेरे उठते हैं तो उपसभाध्यक्ष महोदया, मुझको नहीं कहना चाहिए, सबसे पहले हम लोग अखबार के उसी पत्ने पर जाते हैं कि रेवले में कोई एक्सीडेंट तो नहीं हुआ है, डिरेलमेंट तो नहीं हुआ। रात को जब टेलीफोन आता है तो हमेशा यह डर रहता है रेलवे मिनिस्टर की हैसियत से कि 62 हजार किलोमीटर में रेलवे लाईन है और जो एक करोड़ दस लाख पैसेंजर चलते हैं वह सेफ्टी के साथ में चल रहे हैं या नहीं, यह हमेशा हम लोगों की चिंता रही है और इसलिए हम पूरा विश्वास दिलाना चाहते हैं कि आपके हर सजेशन का जितने हमारे माननीय सदस्य हैं मैं बार-बार कहता हूं कि जो में आप लोगों में क्वालिटी देखता हूं, आपके साथ में विचार विमर्श करता हूं, अभी भी इसी महीने में एक सप्ताह पहले हम लोगों ने बंगलौर में जाकर सेफ्टी के उपर, इसी मुद्दे पर कंसलटेटिव कमेटी के साथ विचार-विमर्श किया है और मैं आपको विश्वास दिलाना चाहता हूं कि जो भी आपका इस मामले में सुझाव होगा हम उसको मानने के लिए तैयार है और जिन परिवार के सदस्य इसमें बिछड़े हैं, जो लोग घायल हुए हैं, जो लोग हमसे बिछड़ गये है, मैं उनके परिवार के प्रति सांतवना व्यक्त करता हूं और मैं माननीय सदस्यों को विश्वास दिलाना चाहता हूं कि एज ए रेलवे मिनिस्टर हमने गंभीरता से लिया है। रेलवे के हमारे जो अधिकारी हैं, कर्मचारी है कोई भी हो, रेलवे में बड़े से बड़ा कोई भी कर्मचारी, अधिकारी हो यदि कोई भी सुरक्षा के मामले में, रेलवे के डवलपमेंट के मामले में जिसकी भी गलती पाई जाती है और इस केस में भी पाया जाएगा तो उसको बक्शा नहीं जाएगा क्योंकि यह जो मामला है और माननीय सदस्यों ने जो मुद्दे उठाए हैं, वह काफी वेल्यूएबल मुद्दे है। और जो-जो माननीय सदस्यों के सुझाव है, जो प्रश्न आपने उठाए हैं दोनों सदनों में, मैं चाहूंगा कि आपके हरेक प्वाइंट पर जांच कमेटी गौर करने का काम करे। इन्हीं शब्दों के साथ उपसभाध्यक्ष जी, फिर से एक बार जिन परिवार के सदस्यों की मृत्यु हुई है या जो घायल हुए हैं उनके प्रति हम संवेदना व्यक्त करते हैं।

उपसभाध्यक्ष (कुमारी सरोज खापर्डे): बहुत-बहुत धन्यवाद मंत्री जी, आपने मृतक परिवारों के प्रति जो सहानुभूति दिखाई है उनके दुख में शामिल होने का जो विचार यहां व्यक्त किया है, आपके विचार के साथ-साथ और मेरे साथ सदन के सभी सदस्य उसमें सहभागी हैं, उनके दुख में सहभागी हैं। हम सब उनके परिवारों के लिए यह कामना करेंगे कि भगवान उनको इस प्रकार का सदमा बर्दाशत करने के लिए शक्ति प्रदान करें। उनको जो मदद देने की आपने घोषणा की है, उस मदद को भी वहां तक पहुंचाने की आप कोशिश करेंगे, इसमें कोई शक नहीं है। .....**(व्यवधान)...**

श्री सुरिन्दर कुमार सिंगला: मैडम, जिस तरह से वह बोले हैं तो वह हाउस को एश्योरेंस दिलाएं कि वह ऐसी कोशिश करेंगे कि आज के बाद कोई एक्सीडेंट न हो। ...**(व्यावधान)...**

उपसभाध्यक्ष (कुमारी सरोज खापर्डे): मेरे सामने अभी कांस्टीट्यूशन-83वां अमैंडमेंट बिल -1997 है। श्री बोम्मई..

THE CONSTITUTION (EIGHTY-THIRD AMENDMENT) BILL– 1997

THE MINISTER OF HUMAN RESOURCE DEVELOMENT (SHRI S.R. BOMMAI): Madam, I beg to move for leave to introduce a Bill further to amend the Constitutuion of India.

Madam, this makes elementary education a fundamental right.

The question was put and the motion was adopted.

SHRI S.R. BOMMAI: Madam, I introduce the Bill.

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARDE): I now adjourn the House till eleven a.m. tomorrow.

The House then adjouned at fifty-seven minutes past six of the clock till eleven of the clock on Tuesday, the 29th July, 1997.

MGIPF—472 GIPMR/98—300